कृपा कर्कें भूतोंतें भया जो दुःख तिसको जीतेदेवतें भया जोदुःख तिसको समाधिकर्कें जीते देहतें भया जोदुःख तिसको प्राणायामके वल कर्कें जीते सात्विक आहारादिक कर्कें निद्राको जीते सत्व कर्कें रजतमको जीते उपशम कर्कें सत्वको जीते ॥ २३ ॥ यहसव गुरोंमें भक्तिकर्कें पुरुष अनायाससें जीतताहै ॥ २४ ॥ ज्ञान दीपकके देनेवाले भगवान साक्षात् गुरोंमें जिनकी एह मनुष्यहैं यह दुष्ट वुद्धि भई तिनकों संपूर्ण शास्त्रका सुनना हाथीके स्नानकी न्याईं व्यर्थहै ॥ २५ ॥ येगुरु प्रधान पुरुषके ईश्वर साक्षात् भगवानहैं योगीश्वरों कर्कें ढूंढीदेहैं चरण जिनके तिनको यह लोक मनुष्य मानतेहैं जैसें श्रीकृष्णको मनुष्य मानतेहैं ॥ २६ ॥ छे इंद्रियों का जीतना सोईहैं एकता जिनकी ऐसी सव नेमकी विधिहैं तदभी धारणा ध्यान समाधि कों

कृपयाभूतजंदुःखंदैवंजह्यात्समाधिना आत्मजंयोगवीर्येणनिद्रांसत्त्वनिषेवया रजस्तमश्चसत्त्वेनसत्त्वंचोपशमेनच ॥ २३ ॥ एतत्सर्वंगुरौभक्त्यापुरुषोह्यंजसाजयेत् ॥ २४ ॥ यस्यसाक्षाद्भगवतिज्ञानदीपप्रदेगुरौ मर्त्याऽसद्धीःश्रुतंतस्यसर्वंकुंजरशौचवत् ॥ २५ ॥ एषवैभगवान्साक्षात्प्रधानपुरुषेश्वरः योगेश्वरैर्विमृग्यांघ्रिर्लोकोयंमन्यतेनरं ॥ २६ ॥ षड्वर्गसंयमैकांताः सर्वानियमचोदनाः तदंतायदिनोयोगानावहेयुःश्रमावहाः ॥ २७ ॥ यथावार्तादयोह्यर्थायोगस्यार्थंनाबिभ्रति अनर्थायभवेयुस्तेपूर्तमिष्टंतथाऽसतः ॥ २८ ॥ यश्चित्तविजयेयत्तःस्यान्निःसंगोऽपरिग्रहः एकोविविक्तशरणोभिक्षुर्भैक्षामिताशनः देशेशुचौसमेराजन्संस्थाप्यासनमात्मनः स्थिरंसुखंसमंतस्मिन्नासीतर्ज्वंगओमिति ॥ २९ प्राणापानौसंनिरुंध्यात्पूरकुंभकरेचकैः यावन्मनस्त्यजेत्कामान्स्वनासाग्रनिरीक्षणः ॥ ३० ॥

...ही प्राप्तहोतेहैं तो केवल श्रमको देनेंवालीहैं ॥ २७ ॥ जैसें खेतीतें आद लैके जो अर्थहैं सो ...का जो अर्थ मोक्ष तिसको नही सिद्ध करतेहैं सोअनर्थहीके लिये होतेहैं वहिर्मुख जो लो... तिनको इष्टपूर्त ये अनर्थके लिये होतेहैं ॥ २८ ॥ जो चित्तके जीतनेमें यत्नकरे सो संन्यासल... संगछोडि कुच्छ संग्रह न करे अकेला रहे एकांतमें वैठे भिक्षाका अन्न थोडा भोजन करे पवि... वरोवर देशमें आसन रचके स्थिर सुखहोवे तैसें सीधे अंग कर्कें वैठे ओंकारका उच्चारण करे ... ॥ पूर कुंभक रेचक इनकर्कें प्राण अपान को रोके जव तक मन कामोको त्यागे ...साग्र पर दृष्टि राखे ॥ ३० ॥

जहां जहां काम कर्के नष्ट जो मन सो भ्रामता होया निकल जाये तहां तहां सो खैं चके हौली हौली हदेमें रोके ॥ ३१ ॥ इस प्रकार जो अभ्यास करताहै तिसका चित्त थोडे काल कर्के शांतिको प्राप्त होताहै जैसें विना इंधन अग्नि शांत होताहै ॥ ३२ ॥ कामादिक कर्के नही विद्ध प्रशांतहैं सव वृत्तियां जिसकियां ऐसा जो चित्त सो ब्रह्म सुख कर्के स्पर्शकिया सो और ठौर कभी नही जाताहै ॥ ३३ ॥ धर्म अर्थ काम इनको उत्पन्न करने वाला घर तिसतें पहिले संन्यास लैके निकला फेर घरमें आइके तिनकामादिकोंका सवेन करताहै सोतो संन्यासी वांताशाहै निर्लज्जहै ॥ ३४ ॥ जिनानें अपना देह कीडे विष्टा भस्म यह संज्ञाजानके

यतोयतोनिःसरतिमनःकामहतंभ्रमत् ततस्ततउपाहृत्यहृदिरुंध्याच्छनैर्बुधः ॥ ३१ ॥ एवमभ्यसतश्चित्तंकालेनाल्पीयसायतेः अनिशंतस्यनिर्वाणंयात्यनिंधनवन्हिवत् ॥ ३२ ॥ कामादिभिरनाविद्धंप्रशांताखिलवृत्तियत् चित्तंब्रह्मसुखस्पृष्टंनैवोत्तिष्ठेतकर्हिचित् ॥ ३३ ॥ यःप्रव्रज्यगृहात्पूर्वंत्रिवर्गावपनात्पुनः यदिसेवेततान्भिक्षुःसवैवांताश्यपत्रपः ॥ ३४ ॥ यैःस्वदेहः स्मृतोनात्मामर्त्योविट्कृमिभस्मसात् तएनमात्मसात्कृत्वाश्लाघयंतिह्यसत्तमाः ३५ गृहस्थस्याक्रियात्यागोव्रतत्यागोवटोरपि तपस्विनोग्राम्यसेवाभिक्षोरिंद्रियलौल्यता आश्रमापसदाह्येतेखल्वाश्रमविडंवकाः देवमायाविमूढांस्तानुपेक्षेतानुकंपया ३६ आत्मानंचेद्विजानीयात्परंज्ञानधुताशयःकिमिच्छन्कस्यवाहेतोर्देहंपुष्णातिलंपटः ॥ ३७ ॥

झूठा जानिया सोईफेर अपना मनके श्लाघा करतेहैं सोमहा असाधुहैं ॥३५ ॥ गृहस्थीको [illegible] या त्याग और ब्रह्मचारी को व्रतका त्याग और वाण प्रस्थीको ग्रामोंकी सेवा करणी और सं[illegible] सी को इंद्रियोंकी चंचलता एह आश्रममें नीचहैं आश्रमोको विडंवन करतेहैं हरिकी मा[illegible] कें मूर्ख जोहैं तिनामे अनुकंपा कर्के उपेक्षाकरे ॥ ३६ ॥ आत्माजो पर ब्रह्म तिसको जानताहै और ज्ञान कर्के दूरभईहै वासना जिसकी सो क्या इच्छा करता किस कारण लंपट होके देहका पोषण करताहै ॥ ३८ ॥

शरीर जोहै तिसकों रथकहतेहैं इंद्रिय जोहैं सोघोडेहैं इंद्रियोंका ईश्वर जो मन सो घोडियोंकी ल
गामहै शब्दादि जोहैं सो जानेके मार्गहैं बुद्धि जोहै सो सारथीहै ईश्वरने रचाजो चित्त सो जिस
का बंधनहै दशजो प्राणसो जिसका अक्षहै धर्म अधर्म जोहैंसो पैयेहैं अभिमानी जो जीव सो रथीहै
तिसजीवका ॐकार जोहै सो धनुषहै शुद्ध जीव जो हैसो बाणहै परमेश्वर जो सो लक्ष्यहै ॥ ३८
रागद्वेष लोभ शोक मोहभय मदमान अपमान असूया माया हिंसा असहनता अभिनिवेश प्रमाद
भूष निद्रा इनतें आदलयके वैरीहैं एहजीतनेके योग्यहैं राजसी तामसीहै प्रकृति जिनकी कभी सा
त्विकीहै प्रकृति जिनकी सो सबवैरीहैं ॥ ३९ ॥ तवतक मनुष्य शरीरही जोरथ अपने वसहै सेस

आहुः शरीरंरथमिंद्रियाणिहयानभीषून्मनइंद्रियेशं वर्त्मानिमात्राधिषणांच
सूतंसत्त्वंबृहद्बंधुरमीशसृष्टं अक्षंदशप्राणमधर्मधर्मौचक्रेभिमानंरथिनंचजीवं
धनुर्हितस्यप्रणवंपठंतिशरन्तुजीवंपरमेवलक्ष्यम् ॥३८॥ रागोद्वेषश्चलोभश्च
शोकमोहौभयंमदः मानोवमानोसूयाचमायाहिंसाचमत्सरः रःजप्रमादःक्षुन्नि
द्राशत्रवस्त्वेवमादयः रजस्तमःप्रकृतयः सत्त्वप्रकृतयःक्वचित् ३९ यावन्नृ
कायरथमात्मवशोपकल्पंधत्तेगरिष्ठचरणार्चनयानिशातं ज्ञानासिमच्युतबलो
दधदस्तशत्रुःस्वाराज्यतुष्टउपशांतइदंविजह्यात् ॥ ४० ॥ नोचेत्प्रमत्तमस
दिंद्रियवाजिसूतानीत्वोत्पथंविषयदस्युषुनिक्षिपंति तेदस्यवःसहयसूतममुंत
मोंधेसंसारकूपउरुमृत्युभयेक्षिपंति ॥४१॥ प्रवृत्तंचानिवृत्तंचाद्विविधंकर्मवैदिकं
आवर्त्ततप्रवृत्तेननिवृत्तेनाश्नुतेमृतं ॥ ४२ ॥

...ना पकडकर जिसको ऐसे वर्त्तताहै तवतक गुरोंके चरनोंकी सेवा कर्के तीक्ष्ण रूप जो खड्ग तिस
...को धारण करता नाशको प्राप्त कियेहैं वैरी जिसने अपने आनंद कर्के संतुष्ट होके यह जो रथादि
...हि तिसका त्यागकरे ॥ ४० ॥ जो मनहैतो वहिर्मुख जो इंद्रिय रूप घोडे सो और सारथी
...उत्पथमें ले जायके विषयोंमें डारतेहैं जो चोर घोडे सारथी कर्के सहित जो यह जन तिसको तम
...कर्के व्याप्त वडाहै मृत्युका भय जिसमें ऐसा संसार रूप कूप तिसमें पटक देतेहैं ॥ ४१ ॥ प्रवृत्त
...वृत्त दोप्रकारका वैदिक कर्महै प्रवृत्त कर्के फेर इहां आवताहै निवृत्त कर्के मोक्षको प्राप्त
...

हिंसा जिसमे द्रव्यमय कामको देनेवाला अग्निहोत्रादिक अति आसक्ति कर्के युक्त ॥ १ ॥दर्श पौर्णमास चातुर्मास पशु यज्ञ सोम यज्ञ ॥ २ ॥ वैश्वदेव वलवैश्व वरए दवतयोंके स्थान वाग खूहे धर्मसाल इनतें आद लयके पूर्त नामा सो सब प्रवृत्त कहातेहैं ॥ ४३ ॥ द्रव्य का सूक्ष्म परिनाम सो और धूम रात्रि कृष्ण पक्ष दक्षिणायन चंद्रमा अमावास्या ओषधी वीरुध अन्नवीर्य यह पितृयान कहाहै जिसकर्के हे राजन् फेर जन्म लैताहै ॥ ४४ ॥ एक एक कर्के ऐसें क्रमसें होहो कर्के गर्भा धानतें आदलैके श्मशान जिनके अंतमें ऐसेजो संस्कार तिन कर्के संस्कार किया जो द्विज सो इहां जन्म लेताहै ॥ ४५ ॥ जो क्रियायज्ञ हैं तिनको ज्ञान कर्के दीप्त ऐसे जो इंद्रिय तिनमें होमकरतेहैं ॥ ४६ ॥ इंद्रिय जोहैं तिनको संकल्प रूप जो मन तिसमें

हिंस्रंद्रव्यमयंकाम्यमग्निहोत्राद्यशांतिदं ॥ १ ॥ दर्शश्चपौर्णमासश्चचातु
र्मास्यंपशुःसुतः २ एतदिष्टंप्रवृत्ताख्यंहुतंप्रहुतमेवच पूर्तंसुरालयाराम
कूपाजीव्यादिलक्षणं ॥ ४३ ॥ द्रव्यसूक्ष्मविपाकश्चधूमोरात्रिरपक्षयः
अयनंदक्षिणंसोमोदर्शओषधिवीरुधः अन्नरेतइतिक्ष्मेशपितृयानंपुनर्भवः
॥ ४४ ॥ एकैकश्येनानुपूर्वंभूत्वाभूत्वेहजायते निषेकादिश्मशानांतैःसं
स्कारैःसंस्कृतोद्विजः ॥ ४५ ॥ इंद्रियेषुक्रियायज्ञान्ज्ञानदीपेषुजुव्हति
॥ ४६ ॥ इंद्रियाणिमनस्यूर्मौवाचिवैकारिकंमनः वाचंवर्णसमाम्नायेतमोंका
रेस्वरेन्यसेत् ओंकारंबिंदौनादेतंतंतुप्राणेमहत्यमुं ॥ ४७ ॥ अग्निःसूर्यो
दिवाप्राह्णःशुक्लोराकोत्तरंस्वराट्विश्वोथतैजसः प्राज्ञस्तुर्यआत्मासमन्वया
त्॥ ४८ ॥ देवयानमिदंप्राहुर्भूत्वाभूत्वानुपूर्वशः आत्मयाज्युपशांतात्मा
ह्यात्मस्थोननिवर्त्तते ४९ यएतेपितृदेवानामयनेवेदनिर्मिते शास्त्रेणचक्षु
षावेदजनस्थोपिनमुह्यति ॥ ५० ॥

होमकरे विकार युक्त जो मन तिसको वानीमें होमकरे वानीको वर्ण के समूहमें होमकरे वर्ण समूह को अकारादिक स्वर युक्त ओंकार में मिलावे ओंकारको विंदुमें मिलावे विंदुको नादमें मिलावे नादको प्राणोंमें मिलावे प्राणोंको ब्रह्ममें मिलावे ॥ ४७ ॥ अग्नि दिन प्रातःकाल शुक्ल पक्ष पूर्ण मासी उत्तरायण ब्रह्मा विश्व तैजस प्राज्ञ तुर्य आत्मा इनका जो समन्वय तिसतें मुक्त होताहै ॥ ४८ ॥ यह देव यान कहतेहैं इनमें क्रमसें हो कर्के आत्माका पूजने वाला उपशांतहै आत्मा जिसका सो आत्मामें स्थित होके नही ... है ॥ ४९ ॥ जो पितरों देवतयोंके मार्गहैं वेदनेरचेहैं शास्त्र रूप जो नेत्र तिस कर्के ... सो देहमें स्थितभी होताहै पर मोहको प्राप्त नही होताहै ॥ ५० ॥

गोपिआं तो कामतें प्राप्त भईआं भयते कंस भया द्वेषतें शिशुपालतें जो राजा सो भये संबंधते यादव भये स्नेहतें तुम भये भक्ति करके हमभये वेणजोहै तिसको भगवान प्रति पांचो भावतें एकही भाव नहोता भया ॥ २९ ॥ तिसतें किसी उपाय करके श्रीकृष्णमे मनको प्रवेश करे ॥ ३० ॥ हे पांडुके पुत्र तुमारी मासीके पुत्र दंतवक्र और शिशुपाल सो भगवानके पार्षदोंमे श्रेष्ठहैं सनकादिकोंके शापतें वैकुंठतें भ्रष्ट भयेथे ॥ ३१ ॥ युधिष्टिर पूछताहै किस प्रकारका शापहै किसकाहै हरिदासोंका पराभव करताहै हरिके भक्तोंका जन्महोवे यह श्रद्धामें आवे नही ३२ जन्मके कारण देह इंद्रिय प्राण करके हीन जो वैकुंठपुरवासी तिनका यह प्राकृत देहका सं

गोप्यःकामाद्भयात्कंसोद्वेषाच्चैद्यादयोनृपाः संबंधाद्वृष्णयःस्नेहात्यूयं भक्त्यावयंविभो कतमोपिनवेणःस्यात्पंचानांपुरुषंप्रति २९ तस्मात्केनाप्युपायेनमनः कृष्णेनिवेशयेत् ॥ ३० ॥ मातृष्वस्त्रेयोवश्चैद्योदंतवक्रश्च पांडव पार्षदप्रवरौविष्णोर्द्विजशापात्पदाच्च्युतौ ॥ ३१ ॥ युधिष्ठिरउवाच कीदृशः कस्यवाशापोहरिदासाभिमर्शनः अश्रद्धेयइवाभातिहरेरेकांतिनाभवः ३२ देहेंद्रियासुहीनानां वैकुंठपुरवासिनांदेहसंबद्धसंबंधमेतदाख्यातुमर्हसि ॥ ३३ ॥ नारदउवाच एकदाब्रह्मणःपुत्राविष्णोर्लोकंयदृच्छया सनंदनादयोजग्मुश्चरंतोभुवनत्रयं पंचषड्हायनार्भाभाःपूर्वेषामपिपूर्वजाः दिग्वाससःशिशून्मत्वाद्वास्थौतान्प्रत्यषेधतां ॥ ३४ ॥ अशपन्कुपिता एवंयुवांवासंनचार्हथः रजस्तमोभ्यांरहितेपादमूलेमधुद्विषः पापिष्ठामासुरींयोनिंबालिशौयातमाश्वतः ३५ एवंशप्तौस्वभवनात्पतंतौतैःकृपालुभिः प्रोक्तौपुनर्जन्मभिर्वांत्रिभिर्लोकायकल्प्यतां ॥ ३६ ॥

बंध तिसकों कहनेके वास्ते योग्यहो ॥ ३३ ॥ नारदजी कहतेहैं एकसमें ब्रह्माके पुत्र सनकादिक अपनी इच्छासें फिरते होये विष्णुका जो लोक तिसकों जाते भये पांच छे वर्षका जो बालक तिसकी न्याईहै कांति जिनकी वडियोंके वडे दिशाहैं वस्त्र जिनके तिनको बालक मानके द्वारपाल तिनका निषेध करते भये ॥ ३४ ॥ कुपित भये जो सनकादिक सो ऐसे शापदेते भये रजतम करके रहित मधु दैत्यके मारन वाले भगवानका जो चरण मूल तिसमें वसने को योग्य नही हो हे मूर्खोंहो इसकारणतें सतावी पापी जो आसुरी योनि तिसको प्राप्त होवो ३५ ऐसें जब शाप दिया तब वैकुंठतें गिरन लगे तब कृपालु जो सनकादिक तिनाने फेर कहा तीनजन्म करके इस लोकमें प्राप्त होवो ॥ ३६ ॥

सोई दोनों दितिके पुत्रहोतेभये दैत्यदानवों कर्के वंदितभये वडा हिरण्यकशिपु भया छोटा हिर
ण्याक्ष भया । ३७ ॥ हिरण्य कशिपु जोथा सो नृसिंह रूपी जो हरि तिनाने मारा हिरण्याक्ष जो
था सो पृथ्वीके उद्धार करनेमें वाराहरूप जो हरि तिनाने मारा ॥ ३८ ॥ हिरण्यकशिपु जोथा सो
भगवानका प्यारा जो अपना पुत्र प्रल्हादतिसके मारनेके लिये अनेक यतन करता भया ३९ सं
पूर्ण भूतोंका आत्मा ब्रह्मको देखनेवाला प्रशांत भगवान्के तेजकर्के व्याप्त ऐसा जो प्रल्हादतिस
के मारनेको उद्यत मन कर्के समर्थ नहोता भया ॥ ४० ॥ तिसके पीछे सोई जय विजय के
शिनीमें विश्रवाके पुत्र राक्षस होते भये रावण कुंभकर्ण संपूर्ण लोकों को तापदेतेभये ॥ ४१ ॥

जज्ञातेतौदितेःपुत्रौदैत्यदानववंदितौ हिरण्यकशिपुर्ज्येष्ठोहिरण्याक्षोनु
जस्ततः ॥ ३७ ॥ हतोहिरण्यकशिपुर्हरिणासिंहरूपिणा हिरण्याक्षोध
रोद्धारेबिभ्रतासौकरंवपुः ॥ ३८ ॥ हिरण्यकशिपुःपुत्रंप्रल्हादंकेशवप्रियं
जिघांसुरकरोन्नानायातनामृत्युहेतवे ॥ ३९ ॥ तंसर्वभूतात्मभूतंप्रशांतंस
मदर्शनं भगवत्तेजसास्पृष्टंनाशक्नोद्धंतुमुद्यमैः ॥ ४० ॥ ततस्तौराक्षसौजा
तौकेशिन्यांविश्रवःसुतौ रावणःकुंभकर्णश्चसर्वलोकोपतापनौ ॥ ४१ ॥
तत्रापिराघवोभूत्वान्यहनच्छापमुक्तये रामवीर्यंश्रोष्यसित्वंमार्कंडेयमुखा
त्प्रभो ॥ ४२ ॥ तावेवक्षत्रियौजातौमातृष्वस्रात्मजौतव अधुनाशापनिर्मु
क्तौकृष्णचक्रहतांहसौ ॥ ४३ ॥ वैरानुबंधतीव्रेणध्यानेनाच्युतसात्मतां
नीतौपुनर्हरेःपार्श्वंजग्मतुर्विष्णुपार्षदौ ४४ ॥ युधिष्ठिरउवाच विद्वेषोदयि
तेपुत्रेकथमासीन्महात्मनि ब्रूहिमेभगवन्येनप्रल्हादस्याच्युतात्मता ४५
इतिश्रीभागवते सप्तमस्कंधे नारदयुधिष्ठिरसंवादेप्रथमोध्यायः ॥ १ ॥

तिसीसमें भगवान रामरूपहोके शापछुडानेके लिये तिनको मारते भये रामकाजो पराक्रम ति
सको मार्कंडेयके मुखतें तुमसुनोंगे ॥ ४२ सोई जय विजय क्षत्री होते भये तुमारी मासीके पु
त्र कृष्णके चक्र कर्के मारेहैं पापजिनके सो अब शापतें छूटतेभये ॥ ४३ ॥ वैरानुबंध कर्के
तीव्र जो ध्यान तिसकर्के हरिके समान जो रूप तिसको प्राप्त भये हरिका जो समीपतिसको वि
ष्णुके पार्षदहोके जातेभये ४४ तहां युधिष्ठिर पूछताहै महात्मा प्यारा पुत्रप्रल्हाद तिसमें हिरण्य
कशिपुका कैसें वैर होताभया हे भगवन् प्रल्हादका भगवानमें एकचित्तकैसें होताभया ॥ ४५ ॥
एहश्रीभागवतमें सप्तमस्कंधकी भाषा टीकामें प्रथमअध्याय समाप्तभया ॥ १ ॥

दूसरे अध्यायमें विष्णुरोष कर्के दैत्योकर्के लोकोंका नाशकरायके तिसविष्णुने माराभैया तिसके जो पुत्रादिक तिनकों इतिहासों कर्के समझावतेभये यहवर्णन करतेहैं ॥ १ ॥ नारदजीकहतेहैं हेयुधिष्ठिर वाराहरूपी जो भगवान तिनाने देवतयोका पक्षपातकर्के भैयामारा तव क्रोधशोककर्के हिरण्य कशिपु संतापका प्राप्तहोताभया ॥ १ ॥ क्रोधकर्के पूरन चवायेहैं ओष्ट जिसने क्रोध कर्के जलेहैं ऐसे जोनेत्र तिनाकर्के धूम्रजो आकाश तिसको देखता यह कहताभया ॥ २ ॥ करालजो दाडा तिनाकर्के उग्रजोदृष्टि तिसकर्के दुःप्रेक्ष्य भृकुटीयुक्तहै मुख जिसका सभामे त्रिशूल उठाईके दानवोसें यह वोलत भया ३ हेदैत्य दानवाहे हेमूर्द्धन् हेत्र्यक्ष हेशंवर हेशतवाहो हेहयग्रीवहेनमुचे हेपाक हेइल्वल हेविप्रचित्ते हेपुलोमन् हेशकुनादिक तुममेरे वचनकोसुनो सुनेसे पीछे जै

नारदउवाच ॥ तथैवंवाविनिहतेहरिणाक्रोडमूर्त्तिना हिरण्यकशिपूराजन्पर्यतप्यद्रुषाशुचा १ आहचेदंरुषाघूर्णःसंदष्टदशनच्छदः कोपोज्ज्वलद्भ्यां चक्षुर्भ्यांनिरीक्षन्धूम्रमंवरं ॥ २ ॥ करालदंष्ट्रोग्रदृष्ट्यादुष्प्रेक्ष्यभ्रुकुटीमुखः शूलमुद्यम्यसदसिदानवानिदमब्रवीत् ॥ ३ ॥ भोभोदानवदैतेयाद्विमूर्द्धंस्त्र्यक्षशंवर शतवाहोहयग्रीवनमुचेपाकइल्वल विप्रचित्तेममवचः पुलोमन्शकुनादयः शृणुतानंतरंसर्वे क्रियतामाशुमाचिरम् ॥ ४ ॥ सपत्नैर्घातितः क्षुद्रैर्भ्राताmेदयितःसुहृत् पार्ष्णिग्राहेणहरिणासमेनाप्युपधावनैः ॥५ ॥ तस्यत्यक्तस्वभावस्यघृणेर्मायावनौकसः भजंतंभजमानस्यवालस्येवास्थिरात्मनः मच्छूलभिन्नग्रीवस्यभूरिणारुधिरेणवै रुधिरप्रियंतर्पयिष्येभ्रातरंमेगतव्यथः ॥ ६॥ तस्मिन्कूटेहितेनष्टेकृत्तमूलेवनस्पतौ विटपाइवशुष्यंतिविष्णुप्राणादिवौकसः ॥ ७ ॥ तावद्यातभुवंयूयंब्रह्मक्षत्रसमेधितां सूदयध्वंतपोयज्ञस्वाध्यायव्रतदानिनः ॥ ८ ॥

से मैं कहांगा तैसेंकरो विलंव मतकरो ॥ ४ ॥ क्षुद्रजोवैरी तिनानें मेराप्यारा सुहृद्भ्राता सो सहायता करन वालाजो विष्णु तिसने मारा जो विष्णु पहिले समानहै और भजन सहायकिया ५ छोडाहै स्वभाव जिसने दयाहीन माया कर्के वाराह अव्यवस्थितहै चित्त जिनका जो जो भजे तिसको हीभजताहै मेरेत्रिशूल कर्के कटगयीहै ग्रीवा जिसकी तिनकानिकला जो रुधिर तिस कर्के रुधिरहीहै प्यारा जिसको ऐसाजो मेराभ्राता तिनको तृप्तकरूंगा तव मेरी व्यथा जायेगा ॥ ६ ॥ सो कपटीवैरी जो विष्णु तिसकेनष्टभये संतें विष्णुईहै प्राणजिनके ऐसे जो देवता सो नष्टहोवेंगे जैसें जडां कटनेकर्के शाखासूकजातीहैं ॥ ७ ॥ तवतक ब्राह्मण क्षत्री कर्के वधीजो भूमि तिसको जाओ तपयज्ञ स्वाध्याय व्रतदान इनकेकरने वालेकोमारो ॥८ ॥

ब्राह्मणों की जो क्रिया सोईहै मूल जिसका ऐसा विष्णुहै यज्ञरूपहै धर्मरूपहै देवते ऋषिपितर भूत इनका आश्रयहै ॥ ९ ॥ जहां ब्राह्मण गौवां वेद वर्ण आश्रम इनकी क्रिया होतीहैं तिस तिस देशको जावो जाइके अग्नि लगाइ देवो काट डारो ॥ १० ॥ ऐसे सो दैत्य अपने भर्ताकी आज्ञालैके अंदरसे जातेभये तैसेंही प्रजाका जो नाश तिसको करते भये नाशहीहै प्यारा जिनको ११ पुरग्राम व्रज उद्यान क्षेत्र वाग आश्रम खाना खितहरनाके ग्राम पर्वतोंके बीचग्राम घोसियोंके ग्राम नगर तिनको जलावते भये ॥ १२ ॥ कोई एक दैत्य कुदार झावरे लेके सेतु पुरके द्वार तिनको फोड डारतेभये कोई एक फरसे कुहाडियां इनको

विष्णुर्द्विजक्रियामूलोयज्ञोधर्ममयःपुमान् देवर्षिपितृभूतानांधर्मस्यचपरायणः ॥ ९ ॥ यत्रयत्रद्विजागावोवेदावर्णाश्रमक्रियाः तंतंजनपदंयातसंदीपयतवृश्चत ॥ १० ॥ इतितेभर्तृनिर्देशमादायशिरसादृताः तथाप्रजानांकदनंविदधुःकदनप्रियाः ॥ ११ पुरग्रामव्रजोद्यानक्षेत्रारामाश्रमाकरान् खेटखर्वटघोषांश्चददहुःपत्तनानिच॥ १२ ॥ केचित्खनित्रैर्बिभिदुःसेतुप्राकारगोपुरान् आजीव्यांश्चिच्छिदुर्वृक्षान्केचित्परशुपाणयः ॥१३ प्रादहन्शरणान्यन्येप्रजानांज्वलितोल्मुकैः ॥ १४ ॥ एवंविप्रकृतेलोकेदैत्येंद्रानुचरैर्मुहुः दिवंदेवाःपरित्यज्यभुविचेरुरलक्षिताः ॥ १५॥ हिरण्यकशिपुर्भ्रातुःसंपरेतस्यदुःखितः कृत्वाकटोदकादीनिभ्रातृपुत्रानसांत्वयत ॥ १६ ॥ शकुनिंशंबरंघृष्टंभूतसंतापनंवृकं कालनाभंमहानाभंहरिश्मश्रुमथोत्कचंतन्मातरंरुषाभानुंदितिंचजननींगिरा श्लक्ष्णयादेशकालज्ञइदमाहजनेश्वरः १७

हाथोंमें लेके जीवका वाले जो वृक्ष तिनको काट डारते भये ॥ १३ ॥ और जो दैत्य सो उल्मुक जो ज्वलित काष्ठ तिनको लेलेके लोकोंके जो घर तिनको जलावते भये १४ दैत्येंद्रके जो अनु चर दैत्य तिनानें वारंवार उपद्रव किया तवदेवते स्वर्ग छोडके अलक्षित होके भूमिमें विचरतभये १५ हिरण्य कशिपु जो है सो दुःखित होके मरा जो भ्राता तिसको दाहकर्के जल देके भ्राताके जो पुत्र तिनको समझावता भया ॥ १६ ॥ शकुनि शंबर घृष्ट भूतसंतापन वृक कालनाभ महानाभ उत्कच इनकी माता भानु अपनी माता दिति तिनको सुंदर वाणी करके देशकालके जानने वाला हिरण्य कशिपु यह कहता भया ॥ १७ ॥

विंश विधिनिषेधादिनिर्णयश्रवणार्थकृतप्रश्नमुद्धवंप्रतिभगवन्मुखेनभक्तिज्ञानाक्रियारूपयोगत्रयपूर्वकस्वभक्तस्थितिलक्षणनिर्णयवर्णनम् ॥

एकविंशेक्रियाज्ञानभक्तिष्वनधिकारिणाम् कामिनांद्रव्यदेशादिगुणदोषाःप्रपञ्चिताः ॥

एकविंशेउद्धवंप्रतिभगवन्मुखेनज्ञानाद्यनधिकारिणांविषयाभिकांक्षिणां पुरुषाणांद्रव्यदेशादिगुणदोषादिविशेषनिर्णयवर्णनप्रसंगः ॥

द्वाविंशेतत्त्वसंख्यानमविरोधविधोच्यते पुंप्रकृत्योर्विवेकश्चजन्ममृत्युविधादिच ॥ द्वाविंशेतत्त्वादिनिर्णयश्रवणार्थकृतप्रश्नमुद्धवंप्रतिभगवन्मुखेनतत्त्वानिर्णयपुरुषप्रकृतिविवेक जीवधारिजन्ममृत्युनिर्णयवर्णनम् ॥ त्रयोविंशेतिरस्कारसहनोपायईयते भिक्षुगीताप्रकारेणमनसःसंयमोधिया ॥

त्रयोविंशेउद्धवप्रतिभगवन्मुखेनातिरस्कारादिसहननिर्णयप्रसंगान्तरे अवंतिवासिब्राह्मणेतिहासगाथावर्णनयामनः संयमादिवर्णनप्रसंगः ॥ चतुर्विंशेतुसांख्येनमनोमोहोनिवार्यते आत्मनःसर्वभावानामागमायापचिंतया ॥

चतुर्विंशेउद्धवंप्रतिभगवन्मुखेनसांख्यमतेनप्रोक्तोत्पत्तिनिधनानामऽतएवमनोमोहोत्पादकानांसर्वभावानामऽसंशयंविवेककरणान्मोहनिवृत्तिवर्णनप्रसंगः

पंचविंशेस्वनैर्गुण्यप्रतिपत्त्यैनिरूप्यते चित्तप्रभवसत्त्वादिगुणवृत्तिरनेकधा ॥ पंचविंशे उद्धवंप्रतिभगवत्कर्तृकंशमदमादिव्यवहारवर्णनं सत्त्वादिसेवनेनस्वर्गादिप्राप्तिवर्णनं मद्भक्त्यामत्प्राप्तिवर्णनंच ॥

षड्विंशेयोगनिष्ठानां विघातोदुष्टसंगतः साधुसंगेनतन्निष्ठापराकाष्ठातिवर्ण्यते षड्विंशे उद्धवंप्रतिभगवन्मुखेनसाधुदुष्टसंसर्गतोयथासंख्यंज्ञाननिष्ठाविघातवर्णनप्रस्तावेसम्राडैलाभिधानेतिहासतत्कथितगाथावर्णनम् ॥ ॥ ॥

सप्तविंशेक्रियायोगः सद्यश्चित्तप्रसादकः सर्वकामाप्तिहेतुश्चसांगःप्रोक्तः समासतः सप्तविंशेभगवदाराधनविषयक्रियायोगश्रवणार्थकृतप्रश्नमुद्धवंप्रतिभगवन्मुखेन नारायणार्चादौचित्तशुद्धिहेतुभूतयापूजादिप्रवृत्त्यास्वाभीष्टफलप्राप्तिवर्णनं ॥ तदप्रवृत्त्यानिष्टफलप्राप्तिवर्णनंच ॥

अष्टाविंशेतुयःपूर्वं विस्तारेणोपवर्णितःज्ञानयोगःपुनश्चासौसमाहृत्यनिरूप्यते॥
अष्टाविंशेउद्धवंप्रतिभगवन्मुखेनआत्माविवेकेनसंसृतिप्रापणवर्णनं योगानुष्ठाने नदेहात्मविवेकप्राप्तौसत्यांसंसारप्राप्त्यभाववर्णनंच

ऊनत्रिंशेतुयः पूर्वंविस्तारेणनिरूपितः भक्तियोगस्तमेवाहस्वभक्तायसमासतः
ऊनत्रिंशेअविलम्बितंभक्तियोगप्रापणश्रवणार्थं कृतप्रश्नस्यभगवत्कर्तृकतत्त्वोपदेशरूपभवगवद्भक्तियोगेननिवृत्तमोहस्यभगवद्विषय विज्ञप्तिकरणेप्राप्तसामर्थ्यस्योद्धवस्यभगवदनुग्रहेणस्नेहपाशांच्छित्वावदर्य्याश्रमगमनवर्णनम्

त्रिंशेतुप्रागुपक्षिप्तमौसलच्छद्मतोहरिः स्वधामगंतुमन्विच्छन्संजहारनिजंकुलम्॥
त्रिंशेभूयोभगवत्क्रीडाश्रवणार्थंकृतप्रश्नंराजानंप्रति शुकमुखेनउत्पातप्रादुर्भावेहेतोर्यदून्प्रभासक्षेत्रगमनार्थं प्रेरयतस्तत्रगत्वामैरेयपानदोषेणसर्वान्मोहयित्वा ब्रह्मशापप्रादुर्भूतःयोमुसलचूर्णोत्पन्नवंशकांडेन संहरतस्ततोरामांतर्धानानंतरं भौतिकदेहोत्सर्जनार्थं पद्मासनंकुर्वतस्तत्रमृगभ्रांत्यालुब्धकेनताडितस्यततस्तद्दर्शनेनातिविमनस्कंविज्ञप्तिंकुर्वंतंलुब्धकमनुगृह्णताभगवतोरथोर्ध्वगमनवर्णनं भगवत्समीपमागतस्यदारुकस्यद्वारकानिर्गमरूपभगवच्छिक्षयापुनर्नगरे आगमनवर्णनंच ॥

एकत्रिंशेस्वकंधामजगामभगवानितः तमेवानुययुःप्रीत्यावसुदेवादयस्ततः ॥
एकत्रिंशे शुकमुखेन तत्रागतानांब्रह्मादिदेवानांपुरतोयोगधारणयाभगवतोन्तर्धानवर्णनं ततोदारुकोक्त्याशोकान्धोमग्नानांसस्नुषादाराणांवसुदेवादीनांभगवदन्तर्धानस्थानेदेहत्यागवर्णनं ॥ अवशिष्टान्द्वारिकातआनीयेन्द्रप्रस्थंगतेनार्जुनेनकथितवृत्तांतस्ययुधिष्ठिरस्यपौत्रेराज्यंप्रतिष्ठाय भ्रातृभिःसहस्वर्गारोहणवर्णनंच ॥ इतिश्रीभागवतेकादशस्कन्धसूचीपत्रंसंपूर्णीभूतम्

ॐ श्रीराधाकृष्णायनमः प्रथमदशमस्कंधमे उद्धारकेलिये अर भूभार हरणेकों प्रकटभये जो श्री कृष्ण तिनकी लीला कही आगे एकादशमें भक्तनकों आत्म तत्वका उपदेश अर पूजामार्ग और भक्ति मार्ग तिनके फल निर्णय कर्के कहेंगे अर संपूर्ण भक्तांकों अपने स्थानकों प्राप्त करेंगे इस प्रकार इसस्कंधमें भक्त लीला कहतेहैं तहां प्रथम कुरुक्षेत्रमें वसुदेवजी नारदकों कर्मयोग पूच्छते भये तव नारद कर्मयोग सव कहते भये तव चित्त शुद्ध होताभया वसुदेवजीकों ज्ञानभया येजो श्रीकृष्णरामहै सोदोनोही साक्षात ईश्वरहै सोफेर वहज्ञान रहानही तिसतें अवफेर वहज्ञान नारदजीसें पूच्छेंगे वह नारदपांच अध्यायों कर्के वर्णन करेंगे तहांपहिले अध्यायमें वैराग्य उत्पन्न करणे के कारण यदु कुलकों ब्रह्मा शापका । वहाना कर्के विषय सुखकों अनित्य

श्रीवादरायणिरुवाच कृत्वादैत्यवधंकृष्णः सरामोयदुभिर्वृतः भुवोवतार यद्भारंयविष्ठजनयन्कलिम् ॥१॥ येकोपिताःसुवहुपाण्डुसुताःसपत्नैर्दुर्द्यूत हेलनकचग्रहणादिभिस्तान् कृत्वानिमित्तमितरेतरतः समेतान्हत्वान्नृपान्निरहरत्क्षितिभारमीशः ॥ २ ॥

कहतेहैं पीच्छे चार अध्याय कर्के राजजनकका अर नव योगेश्वरोंका संवाद कहेंगे तिसमें परम तत्व निरूपण करेंगे छेमे अध्यायमें श्रीकृष्ण उद्धवका संगम कहेंगे इस प्रकार अकत्तीस अध्यायों कर्के एकादश स्कंध कहेगे तहां पहिले पूर्वस्कंधका स्मरण कर्के शुकदेवजी आरंभ करतेहैं संपूर्ण दैतांका वधकर श्रीकृष्ण वलदेवजीसें मिल यादवों सहित शीघ्र कलह उत्पन्न कर भूमिका भार सव उतारते भये तिसका विस्तार आगे कहेंगे ॥ १ ॥
जो पांडुके पुत्र शत्रुयां कर्के वहुत कोपितकिये कपटके जूए कर्के राजहरा अवग्याकरी द्रौपदी के केश ग्रहण किये तिनकोंही निमित्त कर्के दोनों पक्षमे मिले जो राजातिनकों मारके पृथ्वीका भार उतार तिसीकों विचारते भये सो कहतेहै ॥ २ ॥

यद्यपि भूमिका भाररूप जो राजसेनाहै सो अपने वाहूओ करकें पालित यादवों करकें निपात करी तोवी भारनगया इसतें यदुकुल अनंतहै यह वडा भारहै ऐसें मनमें विचारा सो औरोंने न जाना ॥ ३ ॥ जिसके मैं आश्रय हूं तिसकी पराजयतो और तें नही होई और एतो सब जाद व वैभव करकें उद्धत भयेहै तिसते इनमे आपसमें कलह उत्पन्नकरो जैसें वांसके वनमें आग उठे तैसें सलगाई शांतिकों प्राप्त होयगे पीच्छे अपने धामकोही प्राप्त होयगें ॥ ४ ॥ सोई शुकदेवजी कहतेहै इस प्रकार बुद्धि निश्चयकरकें सत्य संकल्प ईश्वर ब्रह्मशापके वहानेसें अपने कुलका संहारकिया ॥ ५ ॥ पीच्छे इतने काम कर अपने धाम परगये सो कहतेहै जिनके स मान लोकनमें कही कोई लावण्य नही ऐसी अनुपम अपनी मूर्ति तिससें जे भक्त उस मूर्ति

भूभारराजपृतनायदुभिर्निरस्यगुप्तैःस्ववाहुभिरचिंतयदप्रमेयः मन्येऽ वनेर्ननुगतोऽप्यऽगतंहिभारंयद्यादवंकुलमहोऽविषह्यमास्ते ॥ ३ ॥ नैवा ऽन्यतःपरिभवोऽस्यभवेत्कथंचिन्मत्संश्रयस्यविभवोन्नहनस्यनित्यं अंतः कलिंयदुकुलस्यनिधायवेणुस्तम्भस्यवह्निमिवशांतिमुपैमिधाम ॥ ४ ॥ एवंव्यवसितोराजन्सत्यसंकल्पईश्वरः शापव्याजेनविप्राणांसंजह्रेस्वकु लंविभुः ॥ ५ ॥ स्वमूर्त्यालोकलावण्यनिर्मुक्त्यालोचनंनृणां गीर्भिस्ताः स्मरतांचित्तंपदैस्तानीक्षतांक्रियाः ॥ ६ ॥ आच्छिद्यकीर्तिंसुश्लोकां वितत्यह्यंजसानुकौ तमोऽनयातरिष्यंतीत्यगात्स्वंपदमीश्वरः ॥ ७ ॥ राजोवाच ब्रह्मण्यानांवदन्यानांनित्यंवृद्धोपसेविनां विप्रशापःकथमभू द्वृष्णीनांकृष्णचेतसां ॥ ८ ॥

कों देखतेहैं तिनके नेत्रनकों आकर्षन कर जैसें नेत्र उसी मूर्तिमें मगन रहे और नदेषे तैसें ही अपने वचन जो सुनतेहै तिनके चित्त वचनसें हर कर जैसें चित्त और कास्मरण नकरे अर जो चरणारविंद देखतेहै तिनकी गति अर क्रिया उन चरणों से हरलेनी भक्तनके सब इं द्रिय वृत्ति अपने संसारी जीवनका अज्ञान तम हरहोइ तिसके निमित्त भूमिमें अति विमल कीर्ति विस्तार कर स्वधाम कों जाते भये ॥ ७ ॥ इहां राजा संदेहकर पूच्छताहै जो यादव अ ति ब्रह्मण्यहै अति दाताहै जे नित्य वृद्धोकी सेवा करतेहै अर श्रीकृष्ण विषें ही जिनका चित्तहै तिनकों विप्रशापक्यों भया ॥ ८ ॥

हेमा हेमा हेवधू हेपुत्रा वीरजोहै तिसका शोच करनेको नही योग्यहो वैरीके सन्मुखसें उसका जो वध सो वांछितहै और श्लाघा करने लायकहे ॥१८॥ हे सुव्रते भूतोंका जो इहां संवाससो जैसे धर्म सालके ऊपर मिलाष होताहै ऐसेंपहिले कर्म कर्के इकठे होतेहैं फेर अपने अपने कर्मों कर्के न्यारेन्यारे होजातेहैं ॥ १९ ॥ आत्मा जोहै सो नित्यहै नाश रहितहै शुद्धहै सर्वगहै सर्वज्ञहै देहादिकतें न्याराहै यह आत्मा अपनी अविद्या कर्के लिंग देह जोहै तिसका धारन कर्ता है और सुख दुःखादिक को स्वीकार करताहै ॥ २० ॥ जैसें जल जो चलता तिस कर्के तीरके जो वृक्ष सो चलते प्रतीत होतेहैं जैसे नेत्र भ्रमने कर्के भूमी फिरती प्रतीत होतीहे ऐसेंही गुणों कर्के भ्रमता जो मन तिसमें पूर्ण जो पुरुष सो मनके समान जो धर्म तिसको प्राप्त होताहै हे भद्रे लिंग देह कर्के रहितहै पर लिंग देह युक्त जैसा प्रतीतहोताहै ॥ २१ ॥ लिंगदेह रहितहै पर

हिरण्यकशिपुरुवाच अंबांबहेवधूपुत्रावीरंमार्हथशोचितुं रिपोरभिमुखे श्लाघ्यःशूराणांवधईप्सितः ॥ १८ ॥ भूतानामिहसंवासः प्रपायामिव सुव्रते दैवेनैकत्रनीतानामुन्नीतानांस्वकर्मभिः ॥ १९ ॥ नित्यआत्माऽव्ययः शुद्धःसर्वगःसर्ववित्परः धत्तेऽसावात्मनोलिंगंमाययाविसृजन्गुणान् ॥ २० ॥ यथांभसाप्रचलतातरवोपिचलाइव चक्षुषाभ्राम्यमाणेनदृश्यतेचलतीवभूः एवंगुणैर्भ्राम्यमाणेमनस्यविकलः पुमान् यातितत्साम्यतांभद्रेह्यलिंगोलिंगवानिव ॥ २१ ॥ एषआत्मविपर्यासोह्यलिंगेलिंगभावना एषप्रियाप्रियैर्योगोवियोगःकर्मसंसृतिः संभवश्चविनाशश्च शोकश्चविविधःस्मृतः अविवेकश्चचिंताचविवेकास्मृतिरेवच ॥ २२ ॥ अत्राप्युदाहरंतीममितिहासंपुरातनं यमस्यप्रेतबंधूनांसंवादस्तंनिबोधत ॥ २३ ॥ उशीनरेष्वभूद्राजासुयज्ञइतिविश्रुतः सपत्नैर्निहतोयुद्धेज्ञातयस्तमुपासत ॥ २४ ॥ विशीर्णरत्नकवचंविभ्रष्टाभरणस्रजं शरनिर्भिन्नहृदयंशयानमसृगाविलं प्रकीर्णकेशंध्वस्ताक्षंरभसादष्टदच्छदं रजःकुंठमुखांभोजंछिन्नायुधभुजंमृधे ॥ २५ ॥

देहका जो अभिमान सोई आत्माका भी भाव करताहै यही प्रिय अप्रिय कर्के योग वियोग होताहे कर्म नानागर्भोंमें प्रवेश तिसतें उत्पत्ति मृत्यु नाना प्रकारके शोक अज्ञान चिंता ज्ञानका भूलना यह कहाहै २२ इसमेपुरातन इतिहास कहताहां इसमें यमका और प्रेत बंधुओंका संवादहै तिसको तुम सुनो ॥ २३ उशीनर देशमें सुयज्ञ नामा राजा होता भया सो युद्धमें वैरियों ने मारा तब ज्ञाति जोहैं सोतिसके समीप तिसको घेरके बैठते भये २४टूटगयाहै रत्नोका कवच जिसका बिगड गयीहै गहनियोंकी माला जिसकी बानोंसें छद्याहै हृदय जिसका सोयाहै रुधिर कर्के भीजा होया खुलगयेहैं केश जिसके बैठगईआंहैं आंखिआं जिस कीआं क्रोध कर्के चर्वन करेहैं ओठ जिसने धूडसें भराहै मुख जिसका कटगयीहैं आयुधकर्के भुजां जिसकियां २५

विधाताने तिस प्रकारका किया ऐसा जो अपना पति तिसको रानियां जोहैं सो देखकेदुःखी हो तिआंभैआं हेनाथ तुमतगये परंतु हमारेको मारगये ऐसें कहतियां हाथोंसें छातीको कूटतियां राजाके चरनोंकेपास गिरतियां भईयां ॥ २६ ॥ ऊचे स्वरसें रोदनकरतियांहैं प्यारेके जो चरण कमल तिसको कुचोंके केसर करकें लालजो अश्रु तिनकरकें सिंचनकरातियांहैं खुलगयेहैं केश और आभरण जिनके लोकोंको शोकहै तिसको देतियांहैं दुःखकरकेंविलापकरती भईयां ॥ २७ ॥ हे प्रभोनिर्दयी जो विधातातिसने हमारी आंखिनको अगोचर ऐसी जो दशा तिसको तुम प्राप्तहो ये पहले उशीनर देशके जीवोंको जीवकादेनवाले कियेथे सो अब शोककेवधाने वाले किये हो ॥ २८ ॥ हे पृथ्वीके पालक सुहृदोंमेंश्रेष्ठ कृतज्ञतुमारे विना हम कैसें जीवांगियां हेवीरं तु

उशीनरेंद्रंविधिनातथाकृतंपतिंमहिष्यःप्रसमीक्ष्यदुःखिताः हताःस्मनाथे
तिकरैरुरोभृशंघ्नंत्यमुहुस्तत्पदयोरुपापतन् ॥ २६ ॥ रुदंत्यउच्चैर्दयितां
घ्रिपंकजंसिंचंत्यअस्रैःकुचकुंकुमारुणैः विस्रस्तकेशाभरणाःशुचंनृणांसृ
जंत्यआक्रंदनयाविलेपिरे ॥ २७ ॥ अहोविधात्राकरुणेननःप्रभाभवान्प्र
णीतोदृगगोचरांदशां उशीनराणामसिवृत्तिदःपुराकृतोधुनायेनशुचांविव
र्द्धनः ॥ २८ ॥ त्वयाकृतज्ञेनवयंमहीपतेकथंविनास्यामसुहृत्तमनते तत्रानु
यानंतववीरपादयोःशुश्रूषतीनांदिशयत्रयास्यसि ॥ २९ ॥ एवंविलप
तीनांवैपरिगृह्यमृतंपतिं अनिच्छतीनांनिर्हारमर्कोस्तंसंन्यवर्त्तत ॥ ३० ॥
तत्राहप्रेतबंधूनामाश्रुत्यपरिदेवितं आहतान्बालकोभूत्वायमःस्वयमुपा
गतः ॥ ३१ ॥ यमउवाच अहोअमीषांवयसाधिकानांविपश्यतांलोक
विधिंविमोहः यत्रागतस्तत्रगतंमनुष्यंस्वयंसधर्माअपिशोचंत्यपार्थं ३२॥
अहोवयंधन्यतमायदत्रत्यक्ताःपितृभ्यांनविचिंतयामः अभक्ष्यमाणाअव
लावृकादिभिःसरक्षितारक्षतियोहिगर्भे ॥ ३३ ॥

मारे चरनोंकी सेवा करने वालियां ऐसीयां जोहम तिनको जहां तुमजाओ तहां हमको भी संगले चलो ॥ २९ ॥ ऐसें विलाप करतियांहैं मोया जो पति तिसको घेरके बैठियांहैं जलानेकी इच्छा नही करतिआंहैं तिनको सूर्यअस्त होता भया ॥ ३० ॥ तिससमें यम धर्म राज अपनी पुरीमें ही प्रेतके जो बंधु तिनका जो विलाप तिसको सुनके बालकहोके आप आईके यहबोलता भया ॥ ३१ हमतें वडेजन्मसे मरणमें रोतेहैं तिनका मोहदेखो जहांतें मनुष्य आया तहांही चला गया आपभी तहांही जाओगियां परंतु वृथा शोच करतियांहो ॥ ३२ ॥ अहो हमधन्यहैं मांवा पने त्यागेहां परंतु हमशोच नही करतेहैं दुर्बलहैं तदभी भगिहाडोंने नहीखाये तिसतें जोगर्भ में रक्षा करताहे सो बाहिर भी रक्षा करताहे ॥ ३३ ॥ ॥ दुर्गायैनमः

जो ईश्वर अपनी इच्छा करके विश्वको रचताहै पालताहै संहारकरताहै हे अबला तिस ईश्वरका चर अचर खिडानाहै वोही निग्रह अनुग्रहमें समर्थहै ॥ ३४ ॥ ईश्वरने जो रक्षाकरी तवमार्ग में गिडपडीहै तवही वस्तु मिलतीहै ईश्वरने जो नाश किया तोघरमें स्थितहै परंतु तहांही नष्टहोताहै अनाथहोताहै जो ईश्वरने देख्याहै तो वनमेंभी जीवताहै और घरमें रक्षाकरीहै ईश्वर जो मारेतो नहीं जीवताहै ३५ देहजोहै सो अपना कारणभूत लिंगदेह तिसके निमित्तके जो कर्म तिनाकर्के उत्पन्नहोताहै समय पर नष्टहोताहै ऐसें ही देवादिक देही होतेहैं तिसदेहमें स्थित जो आत्मा सो देहके जो धर्म तिनाकर्के नही युक्तहोताहै देहतें आत्मान्याराहै ॥ ३६ ॥ यह जो पुरुषका शरीरसो मोहतें अपना मानताहै न्यारे पंचभूतकावनाहै जैसें घर अपना मानताहै घरतें पुरुष न्याराहै जैसें

यदृच्छयेशःसृजतीदमव्ययोयएवरक्षत्यवलुंपतेचयः तस्यावलाःक्रीडनमाहुरीशितुश्चराचरंनिग्रहसंग्रहेप्रभुः ॥ ३४ ॥ पथिच्युतंतिष्ठतिदिष्टरक्षितंगृहेस्थितंतद्विहतंविनश्यति जीवत्यनाथोपितदीक्षितोवनेगृहेपिगुप्तोस्यहतोनजीवति ॥ ३५ ॥ भूतानितैस्तैर्निजयोनिकर्मभिर्भवंतिकालेनभवंतिसर्वशः नतत्रहात्माप्रकृतावपिस्थितस्तस्यागुणैरन्यतमोनिबध्यते ॥ ३६ ॥ इदंशरीरंपुरुषस्यमोहजंयथापृथग्भौतिकमीयतेगृहं यथोदकैःपार्थिवतैजसैर्जनः कालेनजातोविकृतोपिनश्यति ॥ ३७ ॥ यथानलोदारुषुभिन्नईयतेयथानिलोदेहगतःपृथक्स्थितः यथानभःसर्वगतंनसज्जतेतथापुमान्सर्वगुणाश्रयःपरः ॥ ३८ ॥ सुयज्ञोनन्वयंशेतेमूढायमनुशोचथ यःश्रोतायोनुवक्तेहनसदृश्येतकर्हिचित् ॥ ३९ ॥ नश्रोतानानवक्तायंमुख्योप्यत्रमहानसुः यस्त्विहेंद्रियवानात्मासचान्यःप्राणदेहयोः ॥ ४० ॥

जलसें ववूलेहोतेहैं पृथ्वीतें घटादिकहोतेहैं सुवर्णतें कुंडलादिक होतेहैं और नष्ट हो जातेहैं इसी प्रकार देहभी नष्टहोजातेहैं आत्मानही नष्टहोता ॥ ३७ ॥ जैसें अग्निकाष्ठोंमें स्थितहै और काष्ठतें न्याराहै जैसें पवन देहमें स्थितहै परंतु देहतें न्याराहै जैसें आकाश सर्वत्रहै परंतु कही प्राप्तहोताहै तैसें पुरुषहै सोवी देह इंद्रियों के आश्रयहै पर न्याराहै ॥ ३८ ॥ हे मूर्खाहो यह जो सुयज्ञहै सो सोवताहै इसका तुमशोच करतेहो जो सुनताहै जो बोलताहै सो तो कभी नही देखीदाहै ३९ जो कहोके प्राण सुनतेबोलतेहैं तहांकहतेहैं मुख्यजोप्राणहै जो न सुनताहै नबोलत है कौन बोलतासुनताहै तहांकहतेहैं देहइंद्रियवान जो आत्मा सो प्राण और देहतें न्याराहै सोई सुनताबोलताहै ॥ ४० ॥

भूत इंद्रिय मन इनकर्के रचेहैं ऐसे जो ऊचेनीचे देह तिनमें आत्माहै सोमैंहां ऐसें मानताहै देहतें न्याराहै अपने ज्ञानके बलकर्के कभी अहंकारका त्यागकरताहै ॥ ४१ ॥ जबतक लिंगदेह कर्के युक्त आत्माहै तबतक तिसको कर्मबंधनहै तबतक विपर्ययहै तिसतें क्लेश होताहै यह सब माया कर्के होतेहैं ॥ ४२ ॥ सुखादिकोंमें परमार्थहै यह जो देखना कहिना सोझूठा अभिनिवेशहै जैसें स्वप्नमनोरथ इंद्रियों का जो विषय सो सबझूठाहै ॥ ४३ ॥ तिसतें आत्मा नित्यहै देह अनित्यहै ऐसें जोजानतेहैं ओह सोच नही करतेहैं शोच करने वालियोंका जो स्वभाव सो नही निवृत्तहोताहै ॥ ४४ ॥ वनमें कोई एक वधिक ईश्वरने पाक्षियों का काल रच्या

भूतेंद्रियमनोलिंगान्देहानुच्चावचान्विभुः भजत्युत्सृजतिह्यन्यस्तच्चापिस्वतेजसा ॥ ४१ ॥ यावल्लिंगान्वितोह्यात्मातावत्कर्मनिबंधनं ततोविपर्ययःक्लेशोमायायोगोनुवर्त्तते ॥ ४२ ॥ वितथाभिनिवेशोयंयद्गुणेष्वर्थदृग्वचः यथामनोरथःस्वप्नःसर्वमैंद्रियकंमृषा ॥ ४३ ॥ अथनित्यमनित्यंवानेहशोचंतितद्विदः नान्यथाशक्यतेकर्तुंस्वभावःशोचतामिति ॥ ४४ ॥ लुब्धकोविपिनेकश्चित्पक्षिणांनिर्मितोंतकः वितत्यजालंविदधेतत्रतत्रप्रलोभनं ॥ ४५ ॥ कुलिंगमिथुनंतत्रविचरत्समदृश्यत ॥ ४६ ॥ तयोःकुलिंगीसहसालुब्धकेनप्रलोभिता सासज्जतशिचस्तंत्यांमहिषीकालयंत्रिता ॥ ४७ ॥ कुलिंगस्तांतथापन्नांनिरीक्ष्यभृशदुःखितः स्नेहादकल्पः कृपणःकृपणांपर्यदेवयत् ॥ ४८ ॥ अहोअकरुणोदेवः स्त्रियाकरुणयाविभुः कृपणंमानुशोचंत्यादीनयाकिंकरिष्यति ॥ ४९॥ कामंनयतुमांदेवःकिमर्द्धेनात्मनोहिमे दीनेनजीवतादुःखमनेनविधुरायुषा ५०

सो जाल फिलाई के जहां तहां पंछियोंको चोगसें लोभित करता पकडताभया ॥ ४५ ॥ तहा विचरता जो कुलिंगका जोडा तिसको देखता भया ॥ ४६ ॥ तिनमें वधिकने लोभदेके कुलिंगी जालमें पकडलयी सो बांधीगइ कालके अधीन भई ॥ ४७ ॥ कुलिंगजोहै सो आपदाको प्राप्त अपनी स्त्री को देखके वडा दुःखीभया स्नेहतें कृपण असमर्थ कुलिंग सोविलापकरताभया ॥ ४८ ॥ अहो देवनिर्दयीहै कृपण जोमैं तिसका शोच करताहुं दीन करुण असीओ स्त्री तिस कर्के क्याकरेगा ॥ ४९ ॥ जहां यहगईहै तहाईश्वर मेरेको लेजाये इस विनामैं आधा रह गयाहां स्त्रीशून्य जीवता तिसकर्के दुःख जैसें होये तैसें जीवां तो क्याहै ५०

दूसरे अध्यायमें भक्ति करके पूछें जो वसुदेवजी तिनकों नारद जनक अर नवयोगीनके संवाद कर शुद्ध वैष्णव धर्म संपूर्ण कहेंगे शुकदेवजी राजे परीक्षतसें कहतेहैं हे राजन गोविंदकी भुजा करके पालित द्वारिका विषें श्रीकृष्ण की उपासना विषें उत्कंठित नारदजी वारंवार वसतेभये ॥ १ ॥ जिस श्रीकृष्णकी उपासनामें मुक्तोंकोबी उत्कंठाहोइ तिनकों कौन न भजे यहकहतेहैंजो संपूर्ण लोकोंमें नीचहै ऐसे कौन इंद्रिय वानहोइ करके भगवानके चरण कमल देवतयों में श्रेष्ठ ब्रह्मादिकोंककें सेवितहैं तिनकोंनसेवे ॥ २ ॥ एक दिननारद वसुदेवके आए तब वसुदेवजी उत्तम आसन परबैठाइ पूजा कर नमस्कार कर पूच्छते भये ॥ ३ ॥ हेभगवन जैसें हरिकी प्राप्तिके मार्ग रूपजो महत पुरुषहैं तिनका आगमनदीनोंके कल्याणकोंहै अर जैसें माता पिताका आग

श्रीशुकउवाच गोविंदभुजगुप्तायांद्वारवत्यांकुरूद्वह अवात्सीन्नारदोऽभी
क्ष्णंकृष्णोपासनलालसः ॥१॥ कोनुराजन्निंद्रियवान्मुकुन्दचरणाम्बुजं न
भजेत्सर्वतोमृत्युरुपास्यममरोत्तमैः ॥२॥ तमेकदातुदेवर्षिंवसुदेवोगृहागतम्
अर्चितंसुखमासीनमभिवाद्येदमब्रवीत् ॥ ३ ॥ वसुदेवउवाच भगवन्भव
तोयात्रास्वस्तयेसर्वदेहिनां कृपणानांयथापित्रोरुत्तमश्लोकवर्त्मनां ॥४॥ भू
तानांदेवचरितंदुःखायचसुखायच सुखायैवहिसाधूनांत्वादृशामच्युतात्म
नाम् ॥ ५ ॥ भजन्तियेयथादेवान्देवाअपितथैवतान् छायेवकर्मसचिवाः
साधवोदीनवत्सलाः ॥ ६ ॥ ब्रह्मंस्तथापिपृच्छामोधर्मान्भागवतांस्तव
यान्श्रुत्वाश्रद्धयामर्त्योमुच्यतेविश्वतोभयात् ॥ ७ ॥

न पुत्रादिकोंके सुखकोंहै तेसें तुमारा आगमन संपूर्ण देहधारियोंके कल्यानकोंहै ॥ ४॥ महत्पुरुषाकों देवतयोंकी उपमा अनुचितहै यह कहतेहै प्राणियोंको देवतयोंके चरित्र वहुत दृष्टि आदि करि दुखही करतेहै साधुयोंके चरित्रतो सदा सुखही करतेहै तिसतें तुमारेजैसे जो अच्युत रूपहै तिनका आगमन सुखहीं करताहै ॥ ५ ॥ और जो देवते सुखदेतेहै तो उसके भजनके अनुसार देतेहै तैसें साधुतो नही देतेहै सोकहतेहै जैसें च्छाया जैसी भांति पुरुष करे तैसें च्छायामें होइ साधुतो दीनको देखतई कृपालु होतेहै ॥ ६ ॥ सो नारद हम यद्यपि तुमारे आगमनहीकरके कृतार्थ भये तथापि तुमको जिन धर्मसें भगवान् प्रसन्न भये सो वैष्णव धर्म पूच्छतेहै जिन धर्मोको श्रद्धासें सुनेतें मनुष्यसंसारसें च्छूटतेहै ॥ ७ ॥

कदाचित् तुमहो भगवानके प्रसन्नताका पात्र तुमसें और कौनहै तहां वसुदेवजी कहतेहै मैंने मुक्ति दाता अनंत भगवानका भूमिमैं पुत्र कामना करकें आराधन किया मोक्षके लिये नहीं किया देवमाया करकें मोहित भया यहवात सुनकें सूती ग्रहमे श्रीकृष्णने कही सो मेरेको स्मरनहै ॥ ८ ॥ हे नारद तिसतें अनेक दुःख संयुक्त सब ओर तें इस विषें भजतेहै ऐसें संसारतें जैसें हमच्छूटे तैसें हमकों तुमशिक्षा देवो ॥ ९ ॥ अब शुकदेवजी राजेसें कहतेहै हे राजन् बुद्धिमान् वसुदेवजी जब ऐसें प्रश्न करतेभये तव हरिके गुणोंकर बोधन कियेसें प्रसन्नभये देवरिषि नारद वसुदेवसें कहते भये ॥ १० ॥ हे यादवोमे श्रेष्ठ वसुदेव तुमने यह निश्चा उत्तम करा जि

अहंकिलपुरानन्तंप्रजार्थेभुविमुक्तिदम् अपूजयंनमोक्षायमोहितोदेवमायया ॥ ८ ॥ यथाविचित्रव्यसनाद्भवद्भिर्विश्वतोभयात् मुच्येमह्यंजसैवाद्धा तथानःशाधिसुव्रत ॥ ९ ॥ शुकउवाच राजन्नेवंकृतप्रश्नोवसुदेवेनधीमता प्रीतस्तमाहदेवर्षिर्हरेःसंस्मारितोगुणैः ॥ १० ॥ नारदउवाच सम्यगेतद्व्यवसितंभवतासात्वतर्षभ यत्पृच्छसेभागवतान्धर्मांस्त्वंविश्वभावनान् ॥ ११ ॥ श्रुतोनुपठितोध्यातआदृतोवानुमोदितः सद्यःपुनातिसद्धर्मोदेवविश्वद्रुहोपिहि ॥ १२ ॥ त्वयापरमकल्याणःपुण्यश्रवणकीर्तनः स्मारितोभगवानद्यदेवोनारायणोमम ॥ १३ ॥ अत्राप्युदाहरन्तीममितिहासंपुरातनम् आर्षभाणांचसंवादंविदेहस्यमहात्मनः॥१४

सतें तुम सबके चित्त शोधक वैष्णव धर्म पूछतेहो ॥ ११ ॥ जो एधर्म सुनतेहै वास्मरण करते है वाश्रद्धा कर आदर करतहै और के कहे सें गुणोंकी स्तुति करी होइतो एउत्तम धर्म तिसीक्षणसें विश्वके अर देवतयोके द्रोहीनकों बी पवित्र करतेहै ॥ १२ ॥ कुच्छ और बीनारद कहते है हे वसुदेव तुम परम कल्याणदेव रूप भगवान पुण्य जिनके श्रवण कीर्तनहै ऐसे श्रीनारायण आज स्मरण कराया सो मेरे पर वडाउपकार किया ॥ १३ ॥ इहामैं तुमसें एक प्राचीन कथा कहताहूं उदारहै चित्त जिसका ऐसा राजा जनक अर रिषभ देवके पुत्र नवयोगेश्वर तिनका संवादकहतेहै ॥ १४ ॥

फेर पूछतेहैं इस शापका निमित्त क्या शापकैसें भया और सबये एक चित्तहें इनमैं भेदक्यों उवजाहे ब्राह्मणोमैं श्रेष्ठ यह संपूर्ण मेरेकोंकहो ॥ ९ ॥ तब शुकदेवजी कहतेहैं पहिले भक्तोंके सुखदानार्थ सकल सुंदर निधान स्वरूप धारी अत्यंत मंगल कर्म भूमिमैं किये यद्यपि आप पूर्णकामहैं तथापि बहुचिरद्वारकामें धामकर क्रीडा करीए सबभक्तोंकों सुख दिया अगले जीवों के उद्धारका उदार कीर्तिविस्तार कर भगवान् जी आगे अपने कुल संहारकी इच्छा करते भये ॥ १० ॥ जबए ऐसी इच्छा करी तब ब्रह्म शापका निमित्त भया सो कहतेहैं जोकर्म अत्यंत पुण्य रूप मंगल रूप गावन वालेके सब पाप दूरकरें ऐसेकर्म करनेकों जो मुनि बुलाएहैं सो मुनि बह कर्म कर आज्ञाले पिंडारक तीर्थकों जातेभये जो वसुदेवजी के ग्रहमैं काल रूप वसताहै

यन्निमित्तःसवैशापोयादृशोद्विजसत्तम कथमेकात्मनांभेदएतत्सर्वंवदस्वमे ॥९॥शुकउवाच॥विभ्रद्वपुःसकलसुंदरसन्निवेशंकर्माचरन्भुविसुमंगलमाप्तकामः आस्थायधामरममाणउदारकीर्तिःसंहर्तुमैछतकुलं स्थितकृत्यशेषः १०कर्माणिपुण्यनिवहानिसुमंगलानि गायज्जगत्कलिमलापहराणिकृत्वा कालात्मनानिवसता यदुदेवगेहे पिण्डारकंसमगमन् मुनयोविसृष्टाः११ विश्वामित्रोऽसितःकण्वोदुर्वासाभृगुरंगिराःकश्यपोवामदेवोत्रिर्वसिष्ठोनारदादयः॥ १२ ॥ क्रीडन्तस्तानुपव्रज्यकुमारायदुनंदनाःउपसंगृह्यपप्रच्छुरविनीताविनीतवत् ॥ १३ ॥ तेवेषयित्वास्त्रीवेषैः साम्बंजाम्बवतीसुतं कृत्वोदरंचसुमहद्वस्त्राद्यैर्यदुनन्दनाः॥१४ ॥ एषापृच्छतिवोविप्रान्तर्वत्न्यऽसितेक्षणा प्रष्टुंविलज्जतीसाक्षात्प्रब्रूतामोघदर्शनाः प्रसोष्यन्तीपुत्रकामा किंस्वित्संजनयिष्यति ॥ १५

सो भगवाननें आज्ञादई ॥ ११ ॥ तिन मुनियोंके नाम कहतेहैं विश्वामित्र असित कण्व दुर्वास भृगु अंगिरा कश्यप वामदेव अत्रि वसिष्ठ नारदसें आदले कर औरबी मुनिहे ॥ १२ ॥ इन रिषीश्वरोंके पास संपूर्ण यदु कुमार जाइ पैर पकड नमस्कार करपूछते भये मनमैं अति कपटसें भरेहैं ॥ १३ ॥ उनकों प्रष्ण कहतेहैं दो श्लोककर सो संपूर्ण बालक जांबवतीका पुत्रसांब तिसकों स्त्रीवेश बनाय पूछते भये अहो मुनीश्वर तुम सर्वज्ञहो यह गर्भ वतीहै इसके पुत्र कामनाहै और प्रसव होनहारहै तुमको साक्षात पूछती लज्जा करतीहै इसके कहो पुत्रहोगा कि कन्या होगी इस प्रकार पूछते भये ॥ १५ ॥

इस प्रकार च्छलसें पूच्छे भये कुपितहोइ तिनसें मुनिबोले हे मूर्खहो यह तुमारे कुल नाशक मुसलकों जनेगों ॥ १३ ॥ यह सुन अति भय भीतभये सो वालक शीघ्रतासें सांबके उदरकों खोलकर लोहका मुलसदेखते भये ॥ १७ ॥ मंद भाग हम यह क्याकिया हमको मनुष्य क्या कहेंगे इस प्रकार विह्वल भये मुलसकों लै आवते भये ॥ १८ ॥ अति मलीनहै मुखकी शोभा जिनकी ऐसे वालक उस मुलसकों सभा मध्य आन संपूण यादवोंके निकट राजेसे कहते भये श्रीकृष्णसें न कहते भये ॥ १९ ॥ सफल विप्रशाप सुन अर मुलस देख द्वारकाके वासी संपूर्ण आश्चर्य मानते भये अर भय भीतहोते भये ॥ २० ॥ श्रीकृष्णकों विना पूच्छे वह यादवोंका

एवंप्रलब्धामुनयस्तानूचुःकुपितान्नृप जनयिष्यतिवोमंदामुसलंकुलनाशनम् ॥ १६ ॥ तच्छ्रुत्वातेतिसंत्रस्ताविमुच्यसहसोदरं साम्बस्यददृशुस्तस्मिन्मुसलंखल्वयस्मयम् ॥ १७ ॥ किंकृतंमंदभाग्यैर्नःकिंवदिष्यंतिनोजनाः इतिविह्वलितागेहानादायमुसलंययुः ॥ १८ ॥ तच्चोपनीयसदसिपरिम्लानमुखश्रियःराज्ञआवेदयांचक्रुःसर्वयादवसन्निधौ ॥ १९ ॥ श्रुत्वामोघंविप्रशापंदृष्ट्वाचमुसलंनृप विस्मिताभयसंत्रस्ताबभूवुर्द्वारकौकसः ॥ १९ ॥ तच्चूर्णयित्वामुसलंयदुराजःसआहुकः समुद्रसलिलेप्रास्यल्लोहंचास्यावशेषितम् ॥ २१ ॥ कश्चिन्मत्स्योग्रसील्लोहं चूर्णानितरलैस्तत उह्यमानानिवेलायांलग्नान्यासन्किलैरकाः॥ २२ ॥ मत्स्योगृहीतोमत्स्यघ्नैर्जालेनान्यैःसहार्णवे तस्योदरगतंलोहंसशल्येलुब्धकोकरोत् २३ भगवाञ्ज्ञातसर्वार्थईश्वरोपितदन्यथा कर्तुंनैच्छद्विप्रशापं कालरूप्यन्वमोदत ॥ २४ ॥ इतिश्रीभागवते एकादशस्कन्धेप्रथमोध्यायः ॥ १ ॥

राजा उंग्रसैन तिस मुलसकों चूर्ण कराइ समुद्रके जल विष डारते भये उसका कुच्छ और लोहा रहा सोवी डारते भये ॥ २१ ॥ कोई मच्छ उस लोहेकों ग्रसगया चूर्ण सबतरंगन कर समुद्रके तीर डारेसे सवएरेका तृण भये ॥ २२ ॥ वह मच्छ समुद्रमें और मच्छोंके संग धीवरने जालमें पकडा उसके उदरसें जो लोहानिकला तिसकी वधिकने भल्ल करी ॥ २३ ॥ भगवान ईश्वर सकल अर्थके ज्ञाताहै सोवी निवारणकी इच्छा न करते भये विप्रशापहीकों मुख्य करते भये इसत उस समें आपकाल रूपहै ॥ २४ ॥ यह श्रीभागवतमे भाषा टीकामे एकादश स्कंधमे प्रथम अध्याय समाप्त भया ॥ १ ॥

नहींभयेहैं पक्षजिनको माताकर्के हीन मंदभागी आलडेमें अपनी माताका मार्ग देखतेहैं ऐसेजो पुत्रतिनकोमें कैसें पालांगा ॥ ५० ॥ ऐसेंविलापकरताहै प्यारीके वियोग कर्के आतुर ऐसा जो कुलिंग तिसको वधिक कालका प्रेराहुआ वानोंकर्के मारताभया ॥ ५१ ॥ हेकुबुद्धीहो ऐसें ही अपना जो नाश तिसको तुम नहीं देखतेहो यह अपना पति जो राजा तिसका शोचकरते सौवरसतक नपावोगे ॥ ५२ ॥ हिरण्य कशिपु कहताहै ऐसें वालकके कहे संतें विस्मितहै चित्त जिनका ऐसे जो संपूर्ण संवंधी सो जगतको झूठा मानतेभये ॥ ५३ ॥ यमजोहै सो ऐसें कह

कथंत्वजातपक्षांस्तान्मातृहीनान्बिभर्म्यहं मंदभाग्याःप्रतीक्षंतेनीडेमेमातरंप्रजाः ॥५० ॥ एवंकुलिंगंविलपंतमाराात्प्रियावियोगातुरमश्रुकंठं सएवशाकुनिकः शरेणविव्याधकालप्रहितोविलीनः ॥ ५१ ॥ एवंयूयमपश्यंत्यआत्मापायमबुद्धयः नैनंप्राप्स्यथशोचंत्यः पतिंवर्षशतैरपि ॥ ५२ ॥ हिरण्यकशिपुरुवाच वालएवंप्रवदतिसर्वेविस्मितचेतसः ज्ञातयोमेनिरेसर्वमनित्यमयथोत्थितं ॥ ५३॥ यमराट्तदुपाख्यायतत्रैवांतरधीयत ज्ञातयोपि सुयज्ञस्यचक्रुर्यत्सांपरायिकं ॥ ५४ ॥ ततः शोचतमायूयंपरंचात्मानमेवच क आत्माकः परोवात्रस्वीयः पारक्यएववा स्वपराभिनिवेशेनविनाज्ञानेनदेहिनाम् ॥ ५५ ॥ नारदउवाच इतिदैत्यपतेर्वाक्यंदितिराकर्ण्यसस्नुषा पुत्रशोकंक्षणात्त्यक्त्वातत्त्वेचित्तमधारयत् ॥५६ इतिश्रीभागवतेसप्तमस्कंधेदितिशोकापनोदनंनामद्वितीयोध्यायः ॥ २ ॥

के उहांही अंतर्हीत होतेभये सुयज्ञके जो ज्ञाति सो परलोककी जो कृतितिसको करतेभए ५४॥ तिसतें तुम पर जो आत्मा तिसका शोच मतकरो कौन अपनाहै कौन विगानाहै अपना औरका जो अभिनिवेश सोई भया अज्ञान तिस के देह धारियोंको अपना विगाना भाव होताहै ॥ ५५ ॥ नारदजीकहतेहैं पुत्र वधून कर्के साहित दितिजोहै सो ऐसें दैत्यपतिका जो वचन तिसको सुनके पुत्र शोक छोडके तत्व ज्ञानमें चित्त धारण करती भई ॥ ५६ ॥ एह श्रीभागवत में सतमें स्कंधम भाषा टीकामें दूसरा अध्याय समाप्तभया ॥ २ ॥

नारदजी कहतेहैं हे राजा हिरण्य कशिपुजोहै सो आपको जीतेही अजर अमर दूसरा वर्गो वरनही एकही राजामैं होवां असे करणे की इच्छा करता भया ॥ १ ॥ मंदराचलकी जो गुफा तिसमें परम दारुण तप को तपता भया ऊपरकोहैं हाथ जिसके आकाशमेंहैं दृष्टि जिस की पैरोंके अंगूठियोंके वल खडा होताभया जटोंकी कांतिकर्के ऐसें सुंदर लगे जैसे प्रलयका सूर्य्य किरनों कर्के सुंदर लगताहै ॥ २ ॥ सो दैत्य तप करताहै तिससमें द वते अपने घरोंमें वसतेभये ॥ ३ ॥ तिस दैत्यके माथे मेंसे धूम सहित तमोमय अग्नि होता भ

नारदउवाच हिरण्यकशिपूराजन्नजेयमजरामरं आत्मानमप्रतिद्वंद्वमेक
राजंव्यधित्सत ॥ १ ॥ सतेपेमंदरद्रोण्यांतपःपरमदारुणं ऊर्ध्ववाहु
र्नभोदृष्टिःपादांगुष्ठाश्रितावनिःजटादीधितिभीरेजेसंवर्त्तार्कइवांशुभिः ॥ २
तस्मिंस्तपस्तप्यमानेदेवाःस्थानानिभेजिरे ॥ ३ ॥ तस्यमूर्ध्नःसमुद्भूतःस
धूमोग्निस्तपोमयः तिर्यगूर्ध्वमधोलोकानतपद्विष्वगीरितः ॥ ४ ॥ चक्षुभु
र्नद्युदन्वंतःसद्वीपाद्रिश्चचालभूः निपेतुःसग्रहास्ताराजज्वलुश्चदिशोदश
॥ ५ ॥ तेनतप्तादिवंत्यक्त्वाब्रह्मलोकंययुःसुराः ॥ ६ ॥ धात्रेविज्ञापयामा
सुर्देवदेवजगत्पते दैत्येंद्रतपसातप्तादिविस्थातुंनशक्नुमः ॥ ७ ॥ तस्यचो
पशमंभूमन्विधेहियदिमन्यसेलोकानयावन्नंक्ष्यंतिवलिहारास्तवाभिभोः ८

या सो चार ओरको तिर्थक् ऊपर नीचेके जो लोक तिनको जलावताभया ॥ ४ ॥ नदीसमु द्र क्षोभको प्राप्त भये द्वीप पर्वत सहित पृथ्वी हलतीभई ग्रह सहित तारे गिरते भये दश दिशा दग्ध होतिआं भईयां ॥ ५ ॥ तिस तप कर्के तप्त जो देवते सो स्वर्ग छोडके ब्रह्माके लोककों जातभये ॥ ६ ॥ ब्रह्मासे जनावतेभये हे देव हे देव हे जगत पति दैत्येंद्रका जो तप तिसकर्के तप्त जो हम सो स्वर्गमें खडे होनेको समर्थ नही होतेहैं ॥ ७ ॥ हे भूमन् तपका उपशमकरो जो मनमें आवे तुमारे को भेटा देने वाले जो लोक सो जव तक नष्टनहोवें ॥ ८

तिस दैत्यका यह संकल्पहै दुश्चर तपकरताहै तुम क्या नही जानतेहो तदभी हम निवेदन कर
तेहैं सो सुनो ॥ ९ तप योगसमाधि कर्के चराचर लोकको रचके संपूर्ण लोकोंतें श्रेष्ठ जो सत्य
लोक तिसको ब्रह्मा जैसे स्थित होता भया १० तैसेंई वर्ध मान जो योग समाधि तिसकर्के आ
त्माको सिद्धकरांगा काल और आत्माये नित्यहैं इसतें बहुत जन्मों कर्के ब्रह्मा तुल्य होवांगा ११
यह जो ब्रह्माकी सृष्टि तिसको और प्रकारकी करांगा देवतयोंके दैत्य दैत्योंको देवते पुण्यका पाप
पापका पुण्य ऐसें जगत्कों उलटा करूंगा ध्रुवतें आद लयके जो लोक तिना कर्के क्या प्रयोज
नहै ॥ १२ ॥ यह हमने उसका हठ सुनाहै परम तपमें स्थित भया हे त्रिलोकीके ईश्वर जो तू

तस्यायंकिलसंकल्पश्चरतोदुश्चरंतपः श्रूयतांनोनविदितस्तवाथापिनिवि
धत ॥ ९॥ सृष्ट्वाचराचरमिदंतपोयोगसमाधिना अध्यास्तेसर्वधिष्ण्येभ्यः
परमेष्ठीनिजासनं १० तदहंवर्द्धमानेनतपोयोगसमाधिनाकालात्मनोश्चनि
त्यत्वात्साधयिष्येतथात्मनः ॥ ११ अन्यथेदंविधास्येहमयथापूर्वमोजसा
किमन्यैःकालनिर्धूतैः कल्पांतेवैष्णवादिभिः १२ इतिशुश्रुमनिर्बंधंतपः
परममास्थितःविधत्स्वानंतरंयुक्तंस्वयंत्रिभुवनेश्वर ॥ १३ ॥ तवासनंद्वि
जगवांपारमेष्ठ्यंजगत्पते भवायश्रेयसेभूत्यैक्षेमायविजयायच ॥ १४॥ इति
विज्ञापितोदेवैर्भगवानात्मभूर्नृपपरीतोभृगुदक्षाद्यैर्ययौदैत्येश्वराश्रमं १५
नददर्शप्रतिच्छन्नंवल्मीकतृणकीचकैः पिपीलिकाभिराचीर्णमेदस्त्वङ्मांस
शोणितं तपंतंतपसालोकान्यथाभ्रापिहितंरविं विलक्ष्यविस्मितः प्राहप्रह
सन्हंसवाहनः ॥ १६ ॥

मको इहां योग्य होवे सो शतावी करो ॥ १३ ॥तुमारा जो पारमेष्ठ्य आसन सो ब्राह्मण गौओं
के सुखके लिये उद्भवके लिये ऐश्वर्य्यके लिये लब्ध पालनके लिये उत्कर्षके लियेहै ॥ १४
ऐसें देवतयोंने जताये भगवान ब्रह्मा सो हे राजा भृगुसें आद संग लयके दैत्येश्वरका जो आश्र
म तिसको जाते भये ॥ १५ ॥ वरमी कर्के ढका होया और बांस इना कर्के घास कर्के छिपाहु
आतिसकोन देखते भये चीटीयोंने खाय लियाहै देह त्वचा मांस रुधिर जिसका तपकर्के लोक
को तापदेताहै जैसें बदलोंमें सूर्ज ढका रहताहै ऐसा जो दैत्य तिसकोदेखके विस्मित होके हंस
जिसकावाहन ऐसे जो ब्रह्माजी सो हस कर्के बोलते भये ॥ १६ ॥

ब्रह्माजी कहतेहैं हे कश्यपके पुत्र तुमाराकल्याणहोवे तुम तपकर्के सिद्धहैं वरको देने वाला आयाहुंजो तुमको चाहियेसोमांगो १७ मैनेतरेहृदयका यहधर्जि देख्याहै वडाअद्भुतहै कीडोंनेखाय लियहैदेह जिसका ऐसाजो तूं तिसकेअस्थियोंमें प्राणहैं सो सोयेहैं १८ ऐसेंतव पहिले ऋषिजोथे सोभीन करतेभये और नकरेंगे विना जलपिये देवतयोंका सौवर्ष कौन प्राणाकों धारनकरे १९ तत्व वेत्तों को दुष्कर यहतेरा विचार तिसकर्के तैने जीताहां तपमेंहै निष्ठा जिसकी ऐसा जो तूं तिसने हेदितिके पुत्र अतिशय कर्के जीत्याहांमैं २० हे असुरोंमें श्रेष्ठ तिसते तेरेको संपूर्ण जो

ब्रह्मोवाच उत्तिष्ठोत्तिष्ठभद्रंतेतपःसिद्धोसिकाश्यप वरदोहमनुप्राप्तो व्रियतामीप्सितोवरः ॥ १७ ॥ अद्राक्षमहमेतत्तेहृत्सारंमहदद्भुतं दंशभक्षितदेहस्यप्राणाह्यस्थिषुशेरते ॥ १८ ॥ नैतत्पूर्वर्षयश्चक्रुर्न करिष्यंतिचापरे निरंवुर्धारयेतप्राणान्कोवैदिव्यसमाःशतम् ॥ १९ ॥ व्यवसायेनतेनेनदुष्करेणमनस्विनां तपोनिष्ठेनभवताजितोहंदितिनंदन ॥ २० ॥ ततस्तआशिषःसर्वाददाम्यसुरपुंगव मर्त्यस्यतेअमर्त्यस्यदर्शनं नाफलंमम ॥ २१ ॥ नारदउवाच इत्युक्त्वादिभवोदेवोभक्षितांगंपिपीलिकैः कमंडलुजलेनौक्षद्दिव्येनामोघराधसा ॥ २२ ॥ सतत्कीचकवल्मीकात्सह ओजोबलान्वितः सर्वावयवसंपन्नोवज्रसंहननोयुवा उत्थितस्तप्तहेमाभो विभावसुरिवैधसः ॥ २३ ॥

आशिषा तिनको मैं देवांगा मनुष्यजो तूं तिसको देवतयोंमें श्रेष्ठ जो मैं तिसका दर्शन निरफल नही होताहै २१ नारदजी कहतेहैं ब्रह्मा जो आदिदेवसो ऐसें कहके पिपीलोंने खायाहै देह जिसका ऐसा जो दैत्य तिसको दिव्य सकलहैं तेजाजिसका ऐसा जो कमंडलुका जल तिस कर्के सिंचन करते भये ॥ २२ ॥ जलके डारेसें सो दैत्य वांसों सें और वरमीमें सें सह ओज वल कर्के युक्त संपूर्ण अगों कर्के संपन्न वज्रजैसाकठोर तरुण सुवर्ण जैसीहै कांति जिसकी ऐसा होके उठता भया जैसें काष्ठमें सें अग्नि निकलताहै ॥ २३ ॥

स्वायंभु मनुका प्रियव्रत नाम पुत्रभया तिसका पुत्र अग्नीध भया तिसका नाभि भया तिसके रि
षभ देवभये ॥ १५ ॥ तिनके मध्य नव योगी श्वरोंका चरित्र कहना चाहतेहै तिसतें औरनका च
रित्र न्यारा करके कहतेहैं ऋषभदेवको वासुदेवका अंश कहतेहैं मोक्ष धर्म कहनेका अवतार लि
यें तिनके सौ १०० पुत्रभये सो सब वेदपारंगत भये ॥ १६ ॥ तिनमध्य नारायणपरायणभरत
ज्येष्ठ भये यह अजनाभ खंड जिसके नामकरी भरत खंडयेनाम प्रसिद्धभया इसकर भरतकी अ
धिकता कही ॥ १७ ॥ = सोराजा भरत पृथ्वी के भोगकर इसकों च्छोड तपस्याकों निकले

प्रियव्रतोनामसुतो मनोःस्वायंभुवस्ययः तस्याग्नीध्रस्ततोनाभि ऋषभस्त
त्सुतःस्मृतः ॥ १५ ॥ तमाहुर्वासुदेवांशंमोक्षधर्मविवक्षया अवतीर्णंसुत
शतंतस्यासीद्ब्रह्मपारगम् ॥१६॥ तेषांतुभरतोज्येष्ठोनारायणपरायणःवि
ख्यातंवर्षमेतद्यन्नाम्नाभारतमद्भुतम् ॥ १७ ॥ सभुक्तभोगांत्यक्त्वेमांनिर्गत
स्तपसाहरिम् उपासीनस्तत्पदवींलेभेवैजन्मभिस्त्रिभिः॥१८॥ तेषांनवनव
द्वीपपतयोस्यसमंततः कर्मतन्त्रप्रणेतारएकाशीतिर्द्विजातयः ॥१९॥ नवा
भवन्महाभागामुनयोह्यर्थशंसिनः श्रमणावातरशनाआत्मविद्याविशार
दाः ॥ २० ॥ कविर्हरिरन्तरिक्षःप्रबुद्धःपिप्पलायनः आविर्होत्रोथद्रुमि
लश्चमसः करभाजनः ॥ २१ ॥

हरिकी उपासना करते तीनजन्म करके हरिकी पदवीकों प्राप्त भये ॥ १८ ॥ इस भरत खंडके
चारो ओर तिनके मध्य नौपुत्र नौद्वीपके पति भये अकासी पुत्र ब्राह्मण भये कर्म मार्गके प्रव
र्तक ॥ १९ ॥ ओर नौपुत्र महाभागवत मुनिभये परमार्थके उपदेशकर्ता आत्मज्ञानके अभ्यासमें
तत्पर दिगंवर आत्म विद्यामें पारंगत भये ॥ २० ॥ तिनके नाम कहतेहै कवि हरि अंतरिक्ष
प्रबुद्ध पिप्पलायन आविर्होत्र द्रुमिल चमस करभाजन ॥ २१ ॥

इनके चरित्र कहतेहैं सो संपूर्ण इसविश्वकों भगवत रूप कर्के देखते भये स्थूल सूक्षम जोहै तिसके आत्मासें भिन्न नही देखतेभये आत्म रूपही देखते पृथवीमें फिरतेभये ॥२२॥ नहीरूपकीहै वांच्छितगति जिनकी अर जो कही आसनही ऐसेजोगीश्वर देवते सिद्धसाध्य गंधर्व यक्ष मनुष्य किंनर नाग मुनिचारण भूतनाथ विद्याधर ब्रह्मा गौआं इनके लोकनमैं अपनी इच्छाकर फिरतेहै २३ सो संपूर्ण अपनी इच्छाकर एक दिन रिषियों कर भरत खंडमैं विस्तारित जोउदार चित राजे जनकका यज्ञहै तहां आवतेभये ॥ २४ ॥ सूर्यजैसाहै तेज जिनका ऐसे परम भागवतोंकों

तएतेभगवद्रूपंविश्वंसदसदात्मकम् आत्मनोऽव्यतिरेकेणपश्यन्तोव्यचरन्महीम् २२ अव्याहतेष्टगतयःसुरसिद्धसाध्यगन्धर्वयक्षनरकिन्नरनागलोकान् मुक्ताश्चरंतिमुनिचारणभूतनाथ विद्याधरद्विजगवांभुवनानिकामम् २३ तएकदानिमेःसत्रमुपजग्मुर्यदृच्छयावितायमानमृषिभिरजनाभेमहात्मनः२४ तान्दृष्ट्वासूर्यसंकाशान्महाभागवतान्नृप यजमानोग्नयोविप्राः सर्वएवोपतस्थिरे ॥२५॥ विदेहस्तानभिप्रेत्यनारायणपरायणान् प्रीतःसंपूजयांचक्रे आसनस्थान्यथार्हतः ॥ २६ ॥ तान्रोचमानान्स्वरुचाब्रह्मपुत्रोपमान्नव पप्रच्छपरमप्रीतःप्रश्रयावनतोनृपः ॥ २७ ॥ विदेहउवाच मन्येभगवतःसाक्षात्पार्षदान्वोमधुद्विषः विष्णोर्भूतानिलोकानांपावनायचरन्तिहि ॥ २८

देख यजमान अर अग्नि अर ब्राह्मण सबउठखडे होतेभये २५ तबराजा जनक उनकों नारायणपरायण जान प्रसन्न भये आसनमें बैठे हुओं की यथा योग्य पूजा करते भये॥२६॥ अपनी कांतिकर्कें शोभा संयुक्त सनकादिनके समान तिनको देखप्रसन्न वहुत भये विनयकर नम्रहोइ पूच्छते भये ॥ २७ ॥ पहिले उनकी स्तुति दोश्लोक कर करतेहैं तुम साक्षात मधुदैत्यके द्वेषी भगवानके पारखतहो जिसतें विष्णु भक्त लोकनकों पावन करणकों सबठौर विचरतेहो ॥ २८ ॥

मैने दुर्लभ वस्तू पाईहै तिससें मेरावडा भाग्यहै वह कहतेहैं देह धारियां को मनुष्यदेह दुर्लभहै सोवीक्षण भंगुरहै तिसीमैं भगवानके प्रिय भक्तनकों दर्शन दुर्लभहै ॥ २९ ॥ हे निष्पापहो इ सतें तुमसें अत्यंत कल्याण पूच्छताहू इस संसारमैं अर्धक्षणभीसतसंग मनुष्यकों वडीनिधिहै ३० तिससें हमारा सुननेका अधिकार जानो तो मेरेसें वैष्णव धर्मकहो जिनधर्मों कर प्रसन्नभये भ गवान् भक्तांकों अपना आत्मा वी देतेहै ॥ ३१ ॥ नारद वसुदेवजी सें कहतेहैं हेवसुदेव ऐसें राजाजनकने पूच्छे सो अतिवडे महांत रित्विज और सभासद सहित राजेजनककी स्तुति प्री ति पूर्वक कहते भये ॥ ३२ ॥ राजे जनकनें नौ प्रश्नकिये प्रथम एक वैष्णव धर्म दूसरा परमे श्वरकी भक्ति तीसरा माया चौथा मायाका तरणा पंचमाब्रह्म छेमा कर्म सातमा अवतार चरित्र

दुर्लभोमानुषोदेहोदेहिनांक्षणभंगुरःतत्रापिदुर्लभंमन्येवैकुण्ठप्रियदर्शनम् ॥ २९ ॥ अतआत्यन्तिकंक्षेमंपृच्छामोभवतोनघाः संसारेस्मिन्क्षणार्द्धेपि सत्संगःशेवधिर्नृणाम् ३० धर्मान्भागवतान्ब्रूतयदिनःश्रुतयेक्षमं यैःप्रसन्नःप्रपन्नायदास्यत्यात्मानमप्यजः ॥ ३१ ॥ नारदउवाच एवंतेनिमिना पृष्टावसुदेवमहत्तमाः प्रतिपूज्याब्रुवन्प्रीत्यासदस्यर्त्विजंनृपम् ३२ ॥ कविरुवाच मन्येऽकुतश्चिद्भयमच्युतस्यपादाम्बुजोपासनमत्रनित्यम् उद्विग्नबुद्धेरसदात्मभावाद्विश्वात्मना यत्रनिवर्ततेभीः ॥ ३३ ॥ येवैभगवता प्रोक्ताउपायाह्यात्मलब्धये अंजःपुंसामविदुषांविद्धिभागवतान्हितान् ३४

आठमा भक्तिप्राप्ति नवमा जुग इन एक एक प्रश्नका उत्तर नवही मुनि देतेभये तहा प्रथम अ ति कल्याण रूप जो धर्म सो कविनाम योगीश्वर कहतेहै हारिके चरणार विंदकी उपासना निरभ य स्थानहै उहां किसीसें भय नही तिससें जिनकी बुद्धि देहादिकोंमे आत्माकर समजतेहैं तिन कों नित्य उद्वेगरहताहै वह जो चरणार विंदकी उपासना करे तो सर्वथा संसारका भयदूरहोई ३३ ॥ वैष्णवधर्मके लक्षण कहतेहैं प्रथम मनुआदि रिषियोंके मुखसें वर्ण आश्रमधर्म सब क हतेहै पीच्छे अति रहस्य सो अपने मुखही कर भगवान अज्ञानीनकों वी सुख करकें आत्मज्ञा न प्राप्तहोने कों उपाय कहतेहै सो सब वैष्णवधर्म जानो ॥ ३४ ॥

तिन धर्मनको आश्रय किये मनुष्य कबी विघ्नन करे नही पीडित होतेहैं हे राजन नेत्र मींट दौडे तदवी उलटा न गिरे सो कहतेहैं कदाचित वर्ण आश्रम धर्म नहोइ आवे तो प्रत्यवायी न होइ और फलसें भ्रष्टनहोइ ॥ ३५ ॥ जो बिधिसें बताएहैं सोई भागवत धर्महै यह नियम नही देह कर, वचन कर, मन कर, इंद्रियों कर, बुद्धि चित्त कर, जो करे औरमैं ब्राह्मणहूं क्षत्रीहूं इस स्वभावतें करे सो सबपरमात्मा नारायणकों समर्पणकरे सोई सब वैष्णव धर्म होताहै यह अर्थ गीतामैं कहाहै यत्करोषि पदश्नासि इस श्लोक ॥ ३६ ॥ परमेश्वरसेंविमुख कौन तिनकी माया कर भगवत स्वरूप का अज्ञान होई तिसतें अहं देह यह अभिमान नहोइ तब दूसरे के अभि निवेशते भय होइ इसतें भय तिनकी माया कर होताहै इसतें गुरूईहै देवता अर इष्ट जिसका ऐसा यह बुद्धिमान निश्चकर्के भक्ति करे तिसी ईश्वरकों भजे ॥ ३७ ॥ यहां पूर्वपक्ष

यानास्थायनरोराजन्नप्रमाद्येतकर्हिचित् धावन्निमील्यवानेत्रेनस्खलेन्नपतेदिह ॥ ३५ ॥ कायेनवाचामनसेंद्रियैर्वाबुद्ध्यात्मनावानुसृतस्वभावात् करोतियद्यत्सकलंपरस्मैनारायणायेतिसमर्पयेत्तत् ॥ ३६॥ भयंद्वितीयाभिनिवेशतःस्यादीशादपेतस्यविपर्ययोऽस्मृतिः तन्माययातोवुधआभजेत्तंभक्त्यैकयेशंगुरुदेवतात्मा ॥ ३७॥ अविद्यमानोप्यवभातिहिद्वयोध्यातुर्धियास्वप्नमनोरथौयथा तत्कर्मसंकल्पविकल्पकंमनोवुधोनिरुन्ध्याद्भयंततःस्यात् ॥ ३८ ॥ शृण्वन्सुभद्राणिरथांगपाणेर्जन्मानिकर्माणिचयानिलोके गीतानिनामानितदर्थकानिगायन्विलज्जोविचरेदसंगः ३९

मैं कहताहूं जिनके चित्त विषय कर्के चंचल होतेहैं तिनकों निश्चल भक्ति कैसें होइ और भक्ति न होई तो भय कैसें जाइ तहां कहते कैके विषय कुच्छ वस्तु नहीहै केवल मनका विलास मात्रहै इसतें मनको निग्रह कर्के जो भजन करे तो अभय होइ यह कहतेहैं यद्यपि प्रपंच सब ब्रह्म रूपहीहै दूसरा कोई नही तथापि अविद्या कर दूसरा देखीदाहै जैसें ध्यान कर्ता पुरुषोंकों मनकर स्वपन और मनोरथ देखिए तिसतें संकल्पके कर्ता मनकों बुद्धिमान रोकै तब निश्चलभक्ति कर्के भजनसें अभय होइ ॥ ३८ ॥ जो जगदीशके शुभकर्महै जन्महै अर जो जन्म अर कर्म कर्के भए नाम लोकमैं प्रसिद्धहै, तिनकों लज्जा च्छोडके निसंग होइके गावता फिरे ॥ ३९ ॥

सो दैत्य हंसजिसका वाहन आकाशमें स्थित ऐसा जो ब्रह्मा तिसको देखके शिर कर्के भूमिमे प्रणाम करता भया ब्रह्माके दर्शनकर्केवडाहै उत्सव जिसको ॥ २४ ॥ उठके हाथजोडके नमस्कार कर्के ब्रह्माको देखतहैहर्षके अश्रुयोंकाहै रोमांच जिसके सो गदगदवानी कर्के स्तुति करताभया ॥ २५ ॥ कल्पांतमें कालने रचिया वडा अंधकार तिसकर्के आवृतऐसा जोजगत तिसको संपूर्ण प्रकाश जो तुम सो अपनी कांति कर्के प्रकट करते भये त्रिगुणा श्रय जो आत्मा तिसकर्के इस विश्वको रचतेहोपालतेहो नाश करतेहो रजसत्वतम इनके आश्रयहो परमेश्वरहो तिनको नमस्कारहै ॥ २६ ॥सवनोंके आदि कारण ज्ञानविज्ञानहैं मूर्त्ति जिसकी प्राणमन इंद्रिय

सनिरीक्ष्यबरेदेवंहंसवाहमवस्थितं ननामाशिरसाभूमौतद्दर्शनमहोत्सवः ॥२४ ॥ उत्थायप्रांजलिःप्र०हईक्षमाणोदृशाविभुं हर्षाश्रुपुलकोद्भेदोगिरा गद्गदयागृणात् ॥ २५॥ हिरण्यकशिपुरुवाच कल्पांतिकालसृष्टेनयोंधेनत सावृतं अभिव्यनग्जगदिदंस्वयंज्योतिःस्वरोचिषा आत्मनात्रिवृताचेदं सृजत्यवतिलुंपति रजःसत्त्वतमोधाम्नेपरायमहतेनमः ॥ २६ ॥ नमआ द्यायबीजायज्ञानविज्ञानमूर्त्तये प्राणेंद्रियमनोबुद्धिविकारैर्व्यक्तिमीयुषे२७ त्वमीशिषेजगतस्तस्थुषश्चप्राणेनमुख्येनपतिः प्रजानां चित्तस्यचित्तेर्मन इंद्रियाणांपतिर्महान्भूतगुणाशयेशः ॥ २८ ॥ त्वंसप्ततंतून्वितनोषितन्वा त्रय्याचतुर्होत्रकविद्ययाच त्वमेकआत्मात्मवतामनादिरनंतपारःकविरंत रात्मा २९ ॥ त्वमेवकालोनिमिषोजनानामायुर्लवाद्यावयवैःक्षिणोषि कू टस्थआत्मापरमेष्ठ्यजोमहांस्त्वंजीवलोकस्यचजीवआत्मा ॥ ३० ॥

बुद्धि ये जो विकार तिनाकीव्यक्तीको प्राप्त हो तिनको नमस्कारहे ॥ २७ ॥ तुम स्थावर जंगम के ईश्वर हो मुख्य जो प्राण तिस कर्के प्रजोंके पतिहो चित्तके चित्तहो इं द्रियोंके पतिहो इसीतें महत्तत्व रूप हो भूतगुण आशय इनके ईश्वरहो ॥२८ ॥ तुमही यज्ञहौ तिनका विस्तार करतेहो त्रयी रूप कर्के चातु र्होत्र विद्या कर्के तुमही प्राणियोंके आत्माहो अंत र्यामीहो कविहो अनादिहो नहीहै अंतजिसका ॥२९॥ तुमही कालहो लवादिक जो अंग तिना कर्के लोकोंका आयुका नाशकरतेहो निर्विकार ज्ञानरूप परमेश्वरहो अजन्माहो अपरिच्छिन्न

हो जीव लोकके जीवहो जीवोंके नियंताहो स्थावर जंगम कार्य कारण सो तुमसें कुच्छन्यारा नहीहै विद्या कलासो सवतुमारे अंगहैं ब्रह्मांडहै गर्भमें जिनके प्रधानकी पीठपर स्थितहो ॥ ३१ हे विभो कार्यहै सो तुमारा स्थूल रूपहै जिस कर्के इंद्रिय प्राण मन इनके जो गुण तिनका क्षोभ करतेहो अपने स्वरूपमें स्थितहो अव्यक्तहो ब्रह्माहो पुरातन पुरुषहो ॥ ३२ ॥ अनंत अव्यक्त ऐसा जो रूप तिस कर्के तुमने विश्व व्याप्त कियाहै विद्यामाया इन कर्के युक्त जोभगवान तुम तिनको नमस्कार होवे ॥ ३३ ॥ हेवरदेने वालियोंमें उत्तम जो मेरेको वांछित वर देतेहो तो हे

नातःपरंनापरमप्यनेजदेजच्चकिंचिद्व्यतिरिक्तमस्ति विद्याकलास्तेतनव श्चसर्वाहिरण्यगर्भोसिबृहत्त्रिपृष्ठः ३१व्यक्तंविभोस्थूलमिदंशरीरंयेनेंद्रियप्राणमनोगुणांश्च भुंक्षेस्थितोधामनिपारमेष्ठ्येअव्यक्तआत्मापुरुषःपुराणः ॥ ३२ ॥ अनंताव्यक्तरूपेणयेनेदमखिलंततं चिदचिच्छक्तियुक्तायतस्मैभगवतेनमः ३३ यदिदास्यस्यभिमतान्वरान्मेवरदोत्तम भूतेभ्यस्त्वद्विसृष्टेभ्योमृत्युर्माभून्ममप्रभो ॥ ३४ ॥ नांतर्बहिर्दिवानक्तमन्यस्मादपिनायुधैः नभूमौनांबरेमृत्युर्ननरैर्नमृगैरपि व्यसुभिर्वासुमद्भिर्वासुरासुरमहोरगैः ॥ ३५ ॥ अप्रतिद्वंद्वतांयुद्धेऐकपत्यंचदेहिनां सर्वेषांलोकपालानांमहिमानंयथात्मनः तपोयोगप्रभावानांयन्नरिष्यतिकर्हिचित् ॥ ३६ ॥ इतिश्रीभागवतेसप्तमस्कंधेतृतीयोध्यायः ॥३॥

प्रभो तुमारेरचेहोये जो भूत तिनातें मेरी मृत्यु नहोवे ॥ ३४ ॥ भीतर नहोये बाहिर नहोवे दिनमें नहोये रात्रिमें नहोये औरतें नहोये आयुधों कर्के नहोये भूमिमें नहोये आकाशमें नहोये मनुष्यों कर्के नहोवे सिंहों कर्के नहोये जीवते मेरे इना कर्के नहोये देवते असुर सर्प इना कर्के नहोवे ३५ युद्धमें तुमनजीतो और कोई न जीते सवनामें ऐक पत्य होये सवलोक पालोंकी महिमा जैसी तुमारी महिमा तैसी महिमा होये तपयोग प्रभाव ये कभी नष्ट नहोये यह वरदेवो ॥ ३६ ॥ एह श्रीभागवतके सप्तमस्कंधकी भाषा टीकामें तीसरा अध्याय समाप्त भया ॥ ३ ॥

चौथे अध्यायमें वर पाइके संपूर्ण लोक पालोंको जीतके भगवानसें बैर कर्के दैत्येंद्र इना सबनों को पीडा देताभया यह वर्णन करतेहैं ॥ १ ॥ नारदजीकहतेहैं ऐसें वरण किया ब्रह्मा सोदैत्यके तप कर्के प्रसन्नहोके तिस हिरण्य काशिपुको दुर्ल्लभजो वर तिनको देताभया ॥ १॥ हेपुत्र जिना वरां को मांगताहैं सोवर पुरुषोको दुर्ल्लभहैं तदभी हे दैत्य दुर्ल्लभ जो वर तिनकोमै देताहुं ॥ २ ॥ तिसके अनंतर सफलहै अनुग्रह जिनका असुरोंमं श्रेष्ठ तिसने पूजित किये प्रजेश्वरोंने स्तुत किये ऐसेजो भगवान ब्रह्मा सो अपने धामको जातभये ॥ ३ ॥ ऐसे पायेहैं वर जि

नारदउवाच एवंवृतः शतधृतिर्हिरण्यकशिपोरथ प्रादात्तत्तपसाप्रीतोवरांस्तस्यसुदुर्लभान् ॥ १ ॥ ब्रह्मोवाच तातेमेदुर्ल्लभापुंसांयान्वृणीषेवरान्मम तथापिवितराम्यंगवरान्यदापिदुर्लभान् ॥ २ ॥ ततोजगामभगवानमोघानुग्रहोविभुः पूजितोसुरवर्येणस्तूयमानः प्रजेश्वरैः ॥ ३ ॥ एवंलब्धवरोदैत्योविभ्रद्धेममयंवपुः भगवत्यकरोद्द्वेषंभ्रातुर्वधमनुस्मरन् सावजित्यादेशः सर्वालोकांश्चत्रीन्महासुरः देवासुरमनुष्येंद्रान्गंधर्वगरुडोरगान् ॥ ४ ॥ सिद्धचारणविद्याध्रानृषीन्पितृपतीन्मनून् यक्षरक्षःपिशाचेशान्प्रेतभूतपतीनथ सर्वसत्वपतीन्जित्वावशमानीयाविश्वजित् जहारलोकपालानांस्थानानिसहतेजसा ॥ ५ ॥

सने ऐसाजो दैत्यसो तेज मय शरीर को धारन करताहोया भगवानसें बैर करताभया भ्राताका जो बध तिसको स्मरण करताहैसो दैत्य दिशों को जीतके तीनलोकोंको जीतके देवते असुर मनुष्य इनके जो इंद्र इनको जीतके गंधर्व गरुड सर्प ॥ ४ ॥ सिद्ध चारन वियाधर ऋषि पितरोंके पति यक्ष राक्षस पिशाच इनके ईश्वर प्रेत भूत इनके पति और संपूर्ण प्राणियोंके पति तिनको जीतके अपने वस कर्के विश्वको जीतने वाला दैत्य लोक पालोके तेज सहित जो स्थान तिनको छुडाय लेताभया ॥ ५ ॥

देवतयों के जो वाग तिनकी शोभाकर्के युक्त ऐसा जोस्वर्ग तिसमें वैठताभया तिस स्वर्गमें साक्षात् विश्वकर्माने रच्या त्रिलोकी की संपत्ति का स्थान संपूर्ण सिद्धि कर्के युक्त ऐसा जो इंद्रका भवन तिसमें अधिक वसताभया ॥ ६ ॥ जिसभवनमें मुंगोंकियां पौडिआंहैं मर्कत मणियोंकी भूमिहै जिसमें स्फटिक मणियोंके भित्तहैं वैदूर्ज्जमणियोंके खंभहैं जहां पद्मरागके आसन दूधके फेन जैसियां उज्जलशय्याहैं मोतियोंकियां जोमाला तिनकेहैं परिकर जिनमे जहां तहां घुंगरूव जातियां देवतयों कियां स्त्रिवां डोलतियांहैं रत्नोंकियां जो स्थलियां तिनमे सुंदर

देवोद्यानश्रियाजुष्टमध्यास्तेस्मात्रिविष्टपं महेंद्रभवनंसाक्षान्निर्मितंविश्वकर्मणा त्रैलोक्यलक्ष्म्यायतनमध्युवासाखिलर्द्धिमत् ॥ ६ ॥ यत्रविद्रुमसोपानामहामरकताभुवः यत्रचित्रवितानानिपद्मरागासनानिच पयःफेननिभाःशय्यामुक्तादामपरिच्छदाः कूजद्भिर्नूपुरैर्देव्यःशब्दयंत्यइतस्ततः रत्नस्थलीषुपश्यंतीःसुदतीःसुंदरंमुखं ७ तस्मिन्महेंद्रभवनेमहाबलोमहामनानिर्जितलोकएकराट् रेमेभिवंद्यांघ्रियुगःसुरादिभिःप्रतापितैरूर्जितचंडशासनः ॥ ८ ॥ तमंगमत्तंमधुनोरुगंधिनाविवृत्तताम्राक्षमशेषधिष्ण्यपाःउपासतोपायनपाणिभिर्विनात्रिभिस्तपोयोगबलौजसांपदं ॥ ९ ॥

जो मुख तिसको देखतीहैं सुंदरहै दंत जिनके ॥ ७ ॥ तिस इंद्रके भवनमें महा वली वडाहैमन जिसका जीतेहैं लोक जिसने एकही राजाहै डरते जो देवादिक तिनाकर्के प्रणाम युक्त वडीहै प्रचंड आज्ञा जिसकी ऐसा दैत्य तहां रमताभया ॥ ८ ॥ हे युधिष्ठिर वडाहै गंध जिसका ऐसी मदिराकर्के मत्तहै घूर्महैं लालनेत्र जिसके तप योगबल ओज इनके आश्रय ऐसा जो दैत्य तिसको संपूर्ण लोक पाल भेटा लेलके उपासना करतेभये ब्रह्मा विष्णु रुद्र के विना ॥ ९ ॥

ऐसें करते जोप्रेम लक्षण भक्तियोग जिसको प्राप्त भया तिसकी संसारसें न्यारीगति कहतेहै एसा
जिसका आचर्णहै और हरिके नामकीर्तन करते जिनके अनुरागवधे चित्त अतिकोमल होइ ति
सतें भक्तोंने ही भगवानजीतेहै यह जानकरहसे कबी इतना काल व्यर्थगया यह जान रोवे क
बी अति उत्कंठातें पुकारे कबी हरख करके ऊचे स्वरसें गावे भक्तनके वसभयेहो ऐसें कहके क
बीनाचते इस प्रकार लोकोंसे न्यारी चेष्टा करें जैसें मतवारे विवेक विना करें ॥ ४० ॥ और क
हतेहै आकाश वायु अग्नि जल पृथवी जोति सब प्राणी मात्र दिशा वृक्ष नदियां समुद्र इन स
बकों हरिकाही शरीरजाने अनन्य चित्तहोइके प्रणाम करें यह वैष्णवोंका लक्षणहै ॥ ४१ ॥ अ
वपूच्छतेहैं यह धर्मतो योगीश्वरोंको बी दुर्लभहै अनेक जन्मों करकेबी असाध्यहै सो एक नाम

एवंव्रतःस्वप्रियनामकीर्त्याजातानुरागोद्रुतचित्तउच्चैः हसत्यथोरोदितिरौ
तिगायत्युन्मत्तवन्नृत्यतिलोकवाह्यः ॥४०॥ खंवायुमग्निंसलिलंमहींचज्यो
तींषिसत्त्वानिदिशोद्रुमादीन् सरित्समुद्रांश्चहरेःशरीरंयत्किंचभूतंप्रणमे
दनन्यः ॥४१॥ भक्तिःपरेशानुभवोविरक्ति रन्यत्रचैष त्रिकएककालः प्रप
द्यमानस्ययथाश्नतःस्यु स्तुष्टिःपुष्टिः क्षुदपायोनुघासम् ॥ ४२ ॥ इत्य
च्युतांघ्रिंभजतोनुवृत्त्याभक्तिर्विरक्तिर्भगवत्प्रवोधःभवन्तिवैभागवतस्यरा
जंस्ततः परांशान्तिमुपैतिसाक्षात् ॥ ४३ ॥ राजोवाच अथभागवतंब्रूत
यद्धर्मोयादृशोनृणां यथाचरतियद्ब्रूतेयैर्लिंगैर्भगवत्प्रियः ॥ ४४ ॥

कीर्तन मात्रसें एकही जन्ममें क्योंहोइ तहां कहतेहे प्रेम लक्षणा भक्ति और प्रेमाश्रय भगव
त्स्वरूपकी स्फुरति और गृहादिकोंमे वैराग्य ये तीनो हरिके भजन कर्ता पुरुषहै एक भजन का
लही विषें होतेहे जैसें भोजन करे तिसकों सुख पुष्टि पेटका भजना क्षुधाकी निवृत्ति एतीनो ए
कही काल ग्रासविखें होतेहै ॥ ४२ ॥ पीच्छे भगवानके प्रसादसें कृतार्थहोइ सो कहतेहै इसप्र
कार हरिचरणार विंदका नित्य भजन करे तिसकों प्रेम लक्षणा भक्ति और वैराग्य अर साक्षात
भगवत स्वरूप ज्ञान ये तीनो होइ तब परम शांतिकों पावे ॥ ४३ ॥ अब राजा जनक पूच्छ
ताहै अब तुमकहो वैष्णव मनुष्योंके मध्यकैसें होतेहैं कौन धर्म विषे स्थित कैसास्वभाव कैसा
आचार कैसा बोलना कैसे चिन्ह जिनकर भगवानका प्रियहोताहै सोसंपूर्ण मेरेकों कहो ४४ ॥

इसका उत्तर हरिनामा योगीश्वर तीन श्लोकों करदेतेहैं जो अपनेको सब प्राणीमात्रमें ब्रह्मरूप
कर स्थितदेखें ब्रह्मरूप आपविषें सबप्राणी मात्रको देखें सो उत्तम भागवत कहिये ॥ ४५ ॥
ईश्वरकि विषें प्रेम कहिए ईश्वरके विषें प्रेम करे ईश्वरके भक्तोंसें मैत्री करे मूरखोंपर कृपा करे
शत्रुयोंकी उपेक्षाकरें सो वैष्णव मध्यमहै ऐसी भेदबुद्धिहै ॥ ४६ ॥ जिसकी प्रतिमा मेंही श्र
द्धाहोइ और जीवोंमें नहोइ और भक्तों मेंवीनहोइ तिनाने अवही भक्ति आरंभीहै शनै शनै उ
त्तमहोइगे ॥ ४७ ॥ और आठ श्लोकोंकर उत्तम लक्षण कहतेहैं जो इंद्रियों कर विषयोंका

हरिरुवाच सर्वभूतेषुयःपश्येद्भगवद्भावमात्मनःभूतानिभगवत्यात्मन्येषभा
गवतोत्तमः ॥ ४५ ईश्वरेतदधीनेषुबालिशेषुद्विषत्सुच प्रेममैत्रीकृपोपेक्षा
यःकरोतिसमध्यमः ॥ ४६ ॥ अर्चायामेवहरयेपूजांयःश्रद्धयेहते नतद्भक्ते
षुचान्येषुसभक्तःप्राकृतःस्मृतः॥ ४७ ॥ गृहीत्वापीन्द्रियैरर्थान्योनद्वेष्टिनहृ
ष्यति विष्णोर्मायामिदंपश्यन्सवैभागवतोत्तमः॥ ४८॥ देहेन्द्रियप्राणमनो
धियांयो जन्माप्ययक्षुद्भयतर्षकृच्छ्रैः संसारधर्मैरविमुह्यमानःस्मृत्याहरे
र्भागवतप्रधानः ॥ ४९ ॥ नकामकर्मबीजानांयस्यचेतसिसंभवःवासुदेवै
कनिलयःसवैभागवतोत्तमः ॥ ५० ॥

भोग करतेहै परंतु किसीसें न द्वेषहैन प्रीतिहै सब वस्तु मात्रको ईश्वरकी माया कर जानतेहै सो
भक्तनमें उत्तम होतेहै ॥ ४८ ॥ देहके संसारी धर्मजन्य मरण इंद्रियांको कष्टप्राणाको भूख म
नको भय बुद्धिको तृष्णा इन संसारके धर्मोसें जो मोह नपावे निरंतर हरिकास्मरण करे सो वै
ष्णवों में मुख्यहै ॥ ४९ ॥ जिनके मनमें कामअर कर्म अर वासना न उपजे चित्त एक श्री
कृष्ण स्वरूपमें बसतारहे सो वैष्णवोंमें उत्तम इन तीनो श्लोकों करके भक्तोंके आचरण का उ
त्तर कहा ॥ ५० ॥

जिनके इस देहमें कुल तप वर्ण आश्रम जाति इनका अभिमान नही सो हरिकों प्रियहै ॥ ५१
जिनको वित्त मैं अर आत्मा में अपनी पराई बुद्धि नही अर संपूर्ण प्राणीमात्र में समान
दृष्टि होइ शांतिहोइ सो वैष्णवों मैं उत्तमहै ॥ ५२ ॥ त्रैलोकीके राज्यके लिये वी हरिहीविषें
जिनका चित्तहै ऐसे देवतयों कर्के दुर्लभ भगवानका नौचरण कमल तिसके भजन सें आधेक्षण
लवमात्र चित्त चलसें औैर सार कुच्छ नही ऐसा दृढज्ञानहै जिनको सो वैष्णवोंमें उत्तमहै
॥ ५३ ॥ इहां पूर्व पक्ष करतेहे अहो विषयके संगसें काम कर्के संताप भये भक्तोंमें मन चंच
लहोए तहा कहतेहै मेरी सेवामै जिनकों सुख उपजे तिनके तोमन नही चलते जिनके पराक्रम
अनंतहै ऐसे भगवानके चरण जिनकी शाखारूप अंगुली तिनके नख रूप मणिकी जोचंद्रिका

नयस्यजन्मकर्मभ्यांनवर्णाश्रमजातिभिः सज्जतेऽस्मिन्नहंभावोदेहेवैसहरेः
प्रियः ५१ नयस्यस्वःपरइतिवित्तष्वात्मनिवाभिदा सर्वभूतसमःशान्तःस
वैभागवतोत्तमः ॥५२ ॥ त्रिभुवनविभवहेतवेप्यकुण्ठस्मृतिरजितात्मसुरा
दिभिर्विमृग्यात् नचलतिभगवत्पदारविन्दाल्लवनिमिषार्द्धमपिस्मवैष्णवा
ग्र्यः ॥ ५३ ॥ भगवतउरुविक्रमांघ्रिशाखानखमणिचन्द्रिकयानिरस्ततापे
हृदकथमुपसादतांपुनः सप्रभवतिचंद्रइवोदितेऽर्कतापः ॥ ५४ ॥ विसृज
तिहृदयंनयस्यसाक्षाद्धरिरवशाभिहितोप्यघौघनाशः प्रणयरशनयाधृ
तांघ्रिपद्मः सभवतिभागवतप्रधानउक्तः ॥ ५५ ॥ इतिश्रीभागवतेएका
दशस्कन्धेद्वितीयोध्यायः ॥ २ ॥

तिस कर्के दूरभयाहै कामादिक ताप जहां ऐसे भक्तनके हृद यमैं सो ताप क्यों दृष्टांत कहतेहै
जैसें चंद्रके उदे भयेसें सूर्यका ताप जाताहै ॥ ५४ ॥ और वी मुख्य लक्षण कहतेहै अब इसी
कर नाममात्रके लैतिया पाप समूहका नाश करे ऐसें साक्षात हरि आप जिनके हृदेमैंसे नच्छो
डे सो वैष्णवो मैं उत्तमहै जिसतें इन प्रेम डोर कर्के हरिके चरण कमल हृदेमैं बांध राखेहै ५५
श्रीभागवतमैं भाषाटीकामें एकादश स्कधमैं दूसरा अध्याग समाप्त भया ॥ २ ॥

माया और मायाका तरणा और ब्रह्म अर कर्म इन चार प्रश्णका उत्तर चार ऋषभ देवके पुत्र मुनि तीसरे अध्यायमें कहेंगे राजा जनकपूच्छताहै परमात्मा जो ईश्वर विष्णु की जो माया तिसीमें जानती चाहतेहैं हेभगवत तुम मेरेसें कहो जो माया बडे माया वंतनको मोहन करतिहैं ॥ १ ॥ कदाचित तुमकहो कहेहैं लक्षण जिसके ऐसा भक्त होइके कृतार्थ होए तो क्या वहुत परिश्रम कर्के करेंगे तहा कहतेहैं मरण धर्म जिस संसार ताप कर्के अत्यंत तप्तहोए तिस तापकी ओषधहैं हरिकथा रूपजो अमृत तिसीकों तुमारे वचन सें पीवते मेरेकों तृप्ति नही होतिहैं ॥ २ ॥ अब अंतरिक्षनामा योगीश्वर माया का जो स्वरूप सोतो कहा नहीजा ता तिससें अब सृष्टिकों कहते माया कारूप कहतेहैं हे राजन आदिपुरुषजो भगवान संपूर्ण

राजोवाच परस्यविष्णोरीशस्यमायिनामपिमोहिनीं मायांवेदितुमिच्छा मिभगवन्तोब्रुवन्तुनः ॥१॥ नानुतृप्येजुषन्युष्म द्वचोहरिकथामृतं संसार तापनिष्टप्तोमर्त्यस्तत्तापभेषजम् ॥ २ ॥ अन्तरिक्षउवाच एभिर्भूतानिभू तात्मामहाभूतैर्महाभुज ससर्जोच्चावचान्याद्यःस्वमात्रात्मप्रसिद्धये ॥ ३ ॥ एवंसृष्टानिभूतानिप्रविष्टःपंचधातुभिः एकधादशधात्मानंविभज न्जुषतेगुणान् ॥ ४ ॥ गुणैर्गुणान्सभुंजानआत्मप्रद्योतितैःप्रभुः मन्य मानइदंसृष्टमात्मानमिहसज्जते ॥ ५ ॥ कर्माणिकर्मभिःकुर्वन् सनिमित्ता निदेहभृत्तत्तत्कर्मफलंगृह्णन्भ्रमतीहसुखेतरम् ॥ ६ ॥ इत्थंकर्मगतीर्ग च्छन्वह्वभद्रवहाःपुमान् आभूतसंप्लवात्सर्गप्रलयावश्नुतेऽवशः ॥ ७ ॥

प्राणी मात्र के कारण भूत अपने अंश भूत जीवांको मोक्षके अर्थ पंच महाभूतहै सो शक्ति मायाका रूपहै ॥ ३ ॥ इस प्रकार पंच महा भूतोंसे उत्पन्न भये जोजो सकल प्राणि तिन के मध्य भगवान् अंतर्जामी रूप प्रविष्ट होइ कर्के एकाग्रमन कर अर दश इंद्रिय रूप अ पने न्यारे न्यारे विषय भोग जीवन कों करातेहैं ॥ ४ ॥ तिसजीवात्मा अंतर जामी कर प्रकाश इंद्रियोंसें विषय भोग करते माया रचित शरीरकों आत्माजान तिसी शरीरमें आशक्त होतेहैं ॥ ५ ॥ यह जीव कर्मेंद्रियोंसें वासनासहित कर्म करतेहैं तिनकर्मनकों सुख दुःखरूप फलका भोग करते संसारमैं भ्रमतेहैं ॥ ६ ॥ इस प्रकार अनेक क्लेशयुक्त कर्म मार्गमें च लते यह जीवात्मा परवश होइके महा प्रलय पर्यंत जन्म मरण कों प्राप्त होतेहैं ॥ ७ ॥